सुसमाचार प्रवचन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :

मसीह की कलीसिया

पोस्ट बॉक्स नं० ३८१५

नई दिल्ली-११००४९

प्रथम संस्करण :

१९८१

मुद्रक :

प्रिन्ट इन्डिया

ए-३८/२, फेस I इन्डस्ट्रीयल एरिया,

माया पुरी, नई दिल्ली-११००६४.

Sermons On The Gospel

Twelve Radio Sermons
In Hindi

By
Sunny David

Published by :
CHURCH OF CHRIST
Box 3815
New Delhi-110049.

Table of Contents

		Page
1.	The Gospel of Life	9
2.	The Gospel of Faith	15
3.	The Gospel of Hope	21
4.	The Gospel of Love	26
5.	The Gospel of Grace	31
6.	The Gospel of Peace	37
7.	The Gospel of Light	43
8.	The Gospel of Power	49
9.	The Gospel of Kingdom	54
10.	The Gospel of Salvation	60
11.	The Gospel of Obedience	66
12.	The Gospel Is For All	72

परिचय

मसीह के सुसमाचार का साधारण सा अर्थ है, खुशी की खबर या खुशी का समाचार। अनेक लोगों के लिये इसके कई अर्थ हैं, परन्तु पवित्र शास्त्र के अनुसार इसका अर्थ प्रभु यीशु की मृत्यु, उसके गाड़े जाने तथा फिर से जी उठने पर आधारित है। क्योंकि उसकी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के कारण ही हम इस योग्य हुए कि हमें पापों की क्षमा तथा अनन्त जीवन की आशा मिल सके।

जबकि मसीह ने तमाम संसार के लिये अपने प्राण को दे दिया, और मनुष्य के उद्धार का कारण बना, तब हम देखते हैं कि उसके पास यह पूरा अधिकार था कि वह कुछ ऐसी शर्तों को रखे जिन्हें मानकर कोई भी उद्धार पा सकता है। हम जानते हैं कि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह और दया से है लेकिन फिर भी जब मनुष्य प्रभु की उन सब शर्तों तथा आज्ञाओं को मान लेता है, उद्धार तब भी परमेश्वर के अनुग्रह और दया से ही होगा। कोई भी मनुष्य चाहे कितनी भी आज्ञाओं को मान ले और चाहे कितने भी अच्छे काम कर ले, परन्तु सब कुछ करने के बाद भी वह यह नहीं कह सकता कि उसने अपने उद्धार को कुछ करके कमा लिया है। भाई डेविड ने इस पुस्तक में, जो श्री लंका रेडियो से प्रसारित होनेवाले हमारे प्रोग्राम के वक्ता हैं तथा जिन्होंने इन प्रवचनों को तैयार किया है, सुसमाचार की कई विशेषताओं को बताया है। उन्होंने इसकी वास्तविकता, इसकी शर्तों तथा इस से प्राप्त होनेवाली आशिषों को दिखाया है। और इस बात पर ज़ोर डाला है कि सुसमाचार का पालन करना कितना अधिक आवश्यक है

और इसके मानने से जो परिणाम निकलता है वह कितना बड़ा है। और विशेषकर यह कि सुसमाचार संसार में सब लोगों के लिये है।

हमारा यह प्रयत्न है कि यीशु के सुसमाचार को हम आप तक तथा इस देश के तमाम लोगों तक पहुंचा सकें। हम प्रार्थना करेंगे कि आपका मन सुसमाचार के प्रति खुले ताकि आप प्रभु पर विश्वास करें और उसकी इच्छा को मानें ताकि आपका उद्धार हो इस जीवन में तथा आनेवाले जीवन में भी। परमेश्वर आप से बहुत प्रेम करता है तथा प्रभु यीशु ने आपके लिये अपनी जान दी। हमारा आपसे निवेदन है कि आप इन बातों को देखिये और यह देखिये कि इनका आपके जीवन से क्या सम्बन्ध है। परमेश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि आपका उद्धार हो।

जे० सी० चोट
मसीह की कलीसिया
नई दिल्ली।
मार्च १०, १९८१

प्रस्तावना

कोई भी अच्छा समाचार या खुश-ख़बरी एक सुसमाचार है। प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु तथा पुनरुत्थान के कारण जगत में प्रत्येक मनुष्य का उद्धार हो सकता है, वह पाप के दन्ड से बच सकता है, उसे पाप के दासत्व से मुक्ति मिल सकती है, वह पाप के बन्धनों से छुटकारा पा सकता है। क्या मनुष्य के लिये इससे भी बड़ा कोई और सुसमाचार हो सकता है ?

परमेश्वर प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है। वह प्रत्येक मनुष्य को पाप के विनाश से बचाकर अनन्त जीवन देना चाहता है। इसलिये उसने अपने सामर्थी वचन को मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच भेज दिया। वही मसीह यीशु था। वह परमेश्वर की इच्छा से और उसके अद्‌भुत ज्ञानानुसार क्रूस के ऊपर बलिदान होकर जगत के पापों का प्रायश्चित बना। यीशु आपके सब पापों का प्रायश्चित है। यही मसीह का सुसमाचार है।

प्रस्तुत रचना में मैंने अपने पाठकों के सम्मुख मसीह के सुसमाचार को अनेक दृष्टिकोण से रखा है। मेरी आशा है, कि यह पुस्तक मसीह के सुसमाचार को जगत में फैलाने के लिये किए जा रहे अनेक प्रयत्नों में उपयोगी सिद्ध होगी।

सनी डेविड
नई दिल्ली

विषय सूची

१.	जीवन का सुसमाचार	९
२.	विश्वास का सुसमाचार	१५
३.	आशा का सुसमाचार	२१
४.	प्रेम का सुसमाचार	२६
५.	अनुग्रह का सुसमाचार	३१
६.	मेल का सुसमाचार	३७
७.	ज्योति का सुसमाचार	४३
८.	सामर्थ का सुसमाचार	४९
९.	राज्य का सुसमाचार	५४
१०.	उद्धार का सुसमाचार	६०
११.	आज्ञापालन का सुसमाचार	६६
१२.	सुसमाचार सबके लिये है	७२

१

जीवन का सुसमाचार

मित्रो :

मनुष्य को अपने जीवन से अधिक बढ़कर और कोई वस्तु प्रिय नहीं है। मनुष्य सब कुछ खो सकता है, परन्तु वह अपने जीवन को हर कीमत पर बचाना चाहता है। यदि किसी घर में अचानक भयंकर आग लग जाए, तो लोग घर के भीतर सब कुछ छोड़कर अपनी जान लेकर भागते हैं। हाल ही में अभी हमारे शहर में एक भूकम्प आया था, कुछ ही क्षणों में सारे लोग अपने-अपने घरों से बाहर थे। उनके घरों में सामान था; बहुमूल्य वस्तुएं थीं, परन्तु उन्हें किसी भी चीज़ की कोई चिन्ता नहीं थी। उन्हें केवल अपने-अपने जीवनों की चिन्ता थी। और मान लीजिये यदि किसी प्रकार का कोई नुकसान हो जाता, तो लोगों को कोई विशेष दुख न होता, परन्तु वे इस बात से शान्ति तथा प्रसन्नता का अनुभव करते कि उनकी जान तो बच गई। क्योंकि मनुष्य सबसे अधिक अपने जीवन से प्रेम करता है। कुछ समय पूर्व मैंने एक डकैती की घटना के बारे में पढ़ा था। रात को जब कुछ लोग अपने घर में सो रहे थे तो डाकुओं ने घर में घुसकर हज़ारों रुपए का माल उड़ा लिया। परन्तु अभी वे माल लेकर उस घर से बाहर निकले ही थे, कि एक चौकीदार ने उन्हें देखकर शोर मचा दिया। कुछ ही क्षणों में लोगों की भीड़ लग गई, और उनमें से कुछ उन चोरों का पीछा करने लगे। शायद वह दिन उन चोरों के लिये बड़ा ही ख़राब था, क्योंकि अचानक

वहां कुछ पुलिसवाले आ निकले और वे भी उनका पीछा करने लगे। किन्तु जब उन्होंने देखा कि वे बच नहीं सकते तो वे चोरी का सारा माल वहीं छोड़कर भाग निकले। कितनी मेहनत की होगी उन लोगों ने इस चोरी को करने के लिये, परन्तु इतना जोखिम उठाने के बाद भी उनके हाथ कुछ नहीं लगा। लेकिन आप महसूस कर सकते हैं कि वे चोर इस बात से कितने खुश हुए होंगे, कि कम से कम उनकी जान तो बच गई। क्योंकि मनुष्य अपने जीवन से बढ़कर और किसी वस्तु को मूल्यवान नहीं समझता। वह अपने जीवन को बचाने के लिये सब कुछ दे सकता है।

परन्तु जीवन क्या है ? पवित्र बाइबल का लेखक कहता है, "तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहाँ एक वर्ष बिताएंगे, और व्योपार करके लाभ उठाएंगे। और यह नही जानते कि कल क्या होगा : सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या ? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।" (याकूब ४ : १३, १४)। हज़ारों वर्ष पूर्व मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा था, "हे प्रभु, तू पीढ़ी से पीढ़ी तक हमारे लिये धाम बना है। इससे पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्त-काल तक तू ही ईश्वर है। तू मनुष्य को लौटा कर चूर करता है, और कहता है, कि हे आदमियों, लौट आओ ! क्योंकि हज़ार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे है जैसा कल का दिन जो बीत गया, वा रात का एक पहर। तू मनुष्यों को धारा में बहा देता है; वे स्वपन से ठहरते हैं; वे भोर को बढ़नेवाली घास के समान होते हैं। वह भोर को फूलती और बढ़ती है, और सांझ तक कटकर मुर्झा जाती है। क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हुए हैं; और तेरी जलजलाहट से घबरा गए हैं। तू ने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख, और हमारे छिपे

हुए पापों को अपने मुख की ज्योति में रखा है। क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत जाते हैं, हम अपने वर्ष शब्द की नाईं बिताते हैं। हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष भी हो जाएं, तौभी उनका घमन्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है; क्योंकि वह जल्द कट जाती है, और हम जाते रहते हैं। तेरे क्रोध की शक्ति को और तेरे भय के योग्य तेरे रोष को कौन समझता है? हमको अपने दिन गिनने की समझ दे कि हम बुद्धिमान् हो जाएं।" (भजन संहिता ९०:१—१२)।

मित्रो, मनुष्य अपने जीवन को चाहे कितना भी बचाना चाहे, वह उसे नहीं बचा सकता। वह उसे चाहे कितना भी बढ़ाना चाहे, वह उसे नहीं बढ़ा सकता। और इससे पहिले, कि वह अपने जीवन को वास्तव में समझ ले वह जाता रहता है। वास्तव में हम में से प्रत्येक मनुष्य के लिये मूसा की यह प्रार्थना बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है, कि हम अपने परमेश्वर से यह बरदान मांगे कि वह हमें अपने दिन गिनने की समझ दे ताकि हम बुद्धिमान् हो जाएं। जिससे कि हम जानें कि वास्तव में मनुष्य का जीवन खाना-पीना और सांस लेना ही नहीं है, परन्तु इससे भी बढ़कर कुछ और है, अर्थात् वह एक आत्मिक प्राणी है। उसके पास एक आत्मा है, एक ऐसी वस्तु है जिसका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होगा। मनुष्य की आत्मा वास्तव में उसका प्राण है। एक जगह प्रभु यीशु ने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? (मत्ती १६:२६)। और एक अन्य स्थान पर उसने कहा, "नाशमान् भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।" (यूहन्ना ६:२७)।

सो मित्रो, यदि मनुष्य जीवन के महत्व को समझता है, यदि वह अपने जीवन को बचाना चाहता है, यदि वह जीवन से प्रेम करता है, तो उसे चाहिए कि वह अपनी आत्मा की चिन्ता करे। क्योंकि शरीर जबकि नाशमान् है, आत्मा अमर है, अर्थात् उसका अस्तित्व कभी नहीं मिटता। परन्तु बाइबल कहती है, कि "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है, और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती ७:१३, १४)। इसका अर्थ यह है, कि पृथ्वी पर मनुष्य की देह के अस्तित्व का अन्त हो जाने के बाद प्रत्येक मनुष्य की आत्मा एक ऐसे अनन्तकाल में प्रवेश करेगी जिसका कभी अन्त न होगा। और जिस स्थान पर मनुष्य उस समय प्रवेश करेगा, उसका निश्चय वह स्वयं आज कर सकता है। यदि आज वह सकरे या तंग मार्ग पर चल रहा है तो वह अनन्त जीवन में प्रवेश करेगा। परन्तु यदि वह उस मार्ग पर है जो चाकल या चौड़ा है तो वह अनन्त विनाश में प्रवेश करेगा। सकरा मार्ग परमेश्वर का मार्ग है, और चाकल मार्ग जगत का मार्ग है या शैतान का मार्ग है। इसलिये, इस बात में कोई संदेह नहीं, कि परमेश्वर किसी भी मनुष्य को नरक या स्वर्ग में नहीं भेजता, परन्तु प्रत्येक मनुष्य वहां स्वयं अपनी ही इच्छा से प्रवेश करना है। जिस प्रकार से आरम्भ में आदम और हव्वा के पास यह निश्चय करने की योग्यता थी, कि वे बाटिका में परमेश्वर की उपस्थिति में रहकर जीवित रहें या उससे दूर होकर मर जाएं। वैसे ही आज हर एक मनुष्य परमेश्वर के सकरे मार्ग पर चलने का निश्चय करके अनन्त जीवन में प्रवेश कर सकता है, या अपनी इच्छा के चाकल मार्ग पर चलकर अनन्त विनाश में प्रवेश करने का निश्चय कर सकता है। परन्तु कौन मनुष्य अनन्त विनाश

में जाना चाहता है ? कौन उस अनन्त अंधकार में हमेशा के लिये प्रवेश करना चाहता है, जहां हमेशा का रोना और दांत पीसना होगा ? कौन आग की उस झील में हमेशा के लिये तड़पने के लिये प्रवेश करना चाहेगा जिसकी आग कभी बुझती नहीं ? मित्रो, कोई मनुष्य ऐसे स्थान में हमेशा के लिये प्रवेश करना नहीं चाहेगा। और परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई भी मनुष्य उसके भीतर प्रवेश करे।

परन्तु, तौभी, परमेश्वर अपने पूर्व-ज्ञान से, अपने वचन के द्वारा, कहता है, कि बहुतेरे हैं जो उस अनन्त विनाश में प्रवेश करेंगे। क्यों ? इसलिये, क्योंकि परमेश्वर जानता है कि संसार में अधिकाँश लोग उसकी इच्छानुसार नहीं चलना चाहते, वे चाकल मार्ग पर चलना चाहते हैं। परन्तु वे जो अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, उनके लिये परमेश्वर ने एक जीवन का मार्ग प्रगट किया है, ताकि उस पर चलकर वे उस में दाखिल हों। उसने अपने वचन को मनुष्य बनाकर जगत में भेज दिया, और उसे जगत के सब लोगों के पापों के बदले में क्रूस पर चढ़वाकर बलिदान कर दिया, ताकि उसके बलिदान के द्वारा हर एक मनुष्य के पापों का प्रायश्चित हो जाए। परमेश्वर की बाइबल में लिखा है, कि उसने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत के लिये दे दिया, ताकि जो कोई उसमें विश्वास लाए, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना ३:१६)। परमेश्वर के पुत्र मसीह ने स्वर्ग में वापस जाने से पहिले इस बात की आज्ञा दी थी, कि यह जीवन का सुसमाचार जगत के सारे लोगों में प्रचार किया जाए और सुनकर जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसका उद्धार होगा। (मरकुस १६:१५, १६)।

क्या आप अपने जीवन से वास्तव में प्रेम करते हैं ? क्या आप अपने जीवन को वास्तव में बचाना चाहते हैं ? अपनी आत्मा को बचाईए। क्योंकि यदि आप सम्पूर्ण जगत को प्राप्त करके भी अंत में अपनी आत्मा की हानि उठाएं तो आपको क्या लाभ होगा ? परमेश्वर के पुत्र में विश्वास कीजिए, उसकी आज्ञा का पालन कीजिए। जीवन वास्तव में छोटा है, परन्तु याद रखें, अनन्तकाल बहुत बड़ा है।

२

विश्वास का सुसमाचार

मित्रो :

इस कार्यक्रम में मैं आपको किसी नई वस्तु के बारे में नहीं बताने जा रहा हूं। परन्तु मैं आज फिर से आपके सामने उसी सुसमाचार को प्रस्तुत करने जा रहा हूं जो आज से उन्नीस सौ साल पहिले गुलगुता नाम की जगह पर परमेश्वर ने स्वर्ग से प्रगट किया था। यह सुसमाचार एक बहुत बड़ी खुश-खबरी है, अर्थात् परमेश्वर ने जगत के प्रत्येक मनुष्य के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। परन्तु शायद आप कहें, कि परमेश्वर का पुत्र कैसे हो सकता है? क्या परमेश्वर मनुष्य है? मित्रो, परमेश्वर ने अपने वचन की जिस पुस्तक को हम सबको दिया है, उसमें उसने हमें लिखकर यह बताया है, कि जगत की सृष्टि से पूर्व, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था" और "सब कुछ उसी (वचन) के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।" और फिर परमेश्वर हमें बताता है, मित्रो, कि वह, "वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर (उस वचन ने) हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" (यूहन्ना १ : १-३, १४)।

सो आज से उन्नीस सौ वर्ष पूर्व यीशु नाम का जो मनुष्य

गुलगुता की पहाड़ी पर क्रूस पर लटकाया गया था वह और कोई नहीं परन्तु वास्तव में परमेश्वर का वही वचन था जिसे उसने अपने पवित्र आत्मा की सामर्थ से एक कुंवारी के द्वारा उत्पन्न किया था। इस बात की साक्षी वे सभी भविष्यद्वाणियां हैं जो परमेश्वर के पुत्र यीशु के सम्बन्ध में उसके जन्म से सैंकड़ों वर्ष पहिले कही गई थीं। इस बात का प्रमाण यीशु के वे सभी अद्भुत तथा आश्चर्यजनक काम हैं, जो उसने लोगों के बीच में किए, और जिनके बारे में आज हम बाइबल तथा इतिहास में पढ़ते हैं। इस बात का सबूत वे सभी बातें हैं जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय उस स्थान पर घटी थीं। लिखा है, कि जिस समय परमेश्वर के पुत्र यीशु की मृत्यु हुई थी, उस वक्त उस जगह, जहाँ वह क्रूस पर लटकाया गया था, अन्धेरा छा गया था, और धरती डोल गई थी, और चट्टानें तड़क गई थीं। और इतनी दहला देनेवाली थीं ये सभी घटनाएं, कि हम पढ़ते हैं, कि जो लोग यीशु को क्रूस पर चढ़ा रहे थे वे इन सभी बातों को देखकर अत्यन्त डर गए और उनमें से बहुतेरों ने कहा, कि सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र है। (मत्ती २७)।

मित्रो, इस संसार में यदि कोई भी बड़ा काम मैं कर सकता हूं तो वह यही है कि मैं आप सबको प्रभु यीशु मसीह के इस सुसमाचार से परिचित कराऊं, कि उसने हम सबके पापों के बदले में स्वयं अपने आपको मरने को दे दिया ! इसी सुसमाचार के सम्बन्ध में प्रेरित पौलुस एक जगह बाइबल में लिखकर कहता है, कि, "मैं यूनानियों और अन्य-भाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं.....क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिए.....उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।" (रोमियों १ : १४, १६)। सो मित्रो, मैं आपका कर्ज़दार हूं ! प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार के बारे में मैं आपका कर्ज़दार

हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि मसीह ने क्रूस पर चढ़कर हम सब के पापों के प्रायश्चित के निमित्त अपना बलिदान दिया है। और उसने कहा है, कि इस सुसमाचार को माननेवाला हर एक व्यक्ति इसके बारे में अन्य लोगों को बताए। मित्रो, इस कार्यक्रम के समय में मैं आपको अच्छी-अच्छी कहानियां सुना सकता हूं, चुटकुले और अच्छी-अच्छी मनोरंजक बातें सुना सकता हूं। संगीत और आवाज़ की अच्छी-अच्छी धुनों से आपका मनोरंजन करा सकता हूं। परन्तु ऐसी कोई भी बात आपकी अनमोल आत्मा को नाश होने से नहीं बचा सकती। आपकी आत्मा को जगत में केवल एक ही वस्तु बचा सकती है, एक ही वस्तु, और वह वस्तु है, यीशु मसीह का सुसमाचार! जो हर एक विश्वास लानेवाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।

क्या आपने कभी सोचा है, कि आपकी मृत्यु के पश्चात् आपकी आत्मा का क्या होगा? शायद आपने अन्य अनेक बातों के बारे में सोचा होगा। आपने कदाचित् अपने परिवार और सम्बन्धियों के बारे में सोचा होगा। शायद आपने अपने घर और जायदाद के बारे में सोचा होगा। परन्तु इनमें से कोई भी वस्तु इतनी अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है जितनी की आपकी आत्मा। जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो उसने उस समय लोगों के सामने एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण सवाल रखा था, उसने कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण (अर्थात् आत्मा) के बदले में क्या देगा?" (मत्ती १६ : २६)। लेकिन यह सवाल आज हम में से हर एक के लिये भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना कि उन लोगों के लिए था। यदि हम जगत की हर एक वस्तु को पा लें, यदि हम धनी और बुद्धिमान् बन जाएं, यदि हम सुखी वा सामर्थी बन जाएं। परन्तु अपने जीवन के अन्त में अपनी ही आत्मा की हानि उठाएं, तो हमें क्या लाभ होगा? मित्रो'

आज मनुष्य बड़ी ही तरक्की कर रहा है। वैज्ञानिक और तकनीकी, बुद्धि और शक्ति के दृष्टिकोण से संसार का प्रत्येक देश आज उन्नति कर रहा है। हम में से प्रत्येक मनुष्य आज उन्नति कर रहा है। हम आगे बढ़ना चाहते हैं, तरक्की करना चाहते हैं। क्योंकि हमें अपने भविष्य की चिन्ता है। परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से आज हम कहाँ जा रहे हैं ? परमेश्वर और सच्चाई का आज हमारे जीवन में क्या स्थान है ? जब पृथ्वी पर का डेरा सरीखा हमारा यह घर गिराया जाएगा तो हमारी आत्मा का क्या होगा ? क्या आपने इस विषय में कभी चिन्ता करके सोचा है ?

मित्रो, यह समय है, कि इस वक्त पूरी गम्भीरता के साथ आप इस विषय पर विचार करें। परमेश्वर चाहता है, कि आप इस बात के ऊपर ध्यान दें। क्योंकि वह अपने वचन की पुस्तक के द्वारा हमें स्पष्ट रूप से बताता है, कि जगत में प्रत्येक मनुष्य अपने पाप और अधर्म के कारण उस से दूर और अलग है, और उसकी महिमा से रहित है। और जब तक मनुष्य उसके साथ अपना मेल नहीं कर लेता, वह उसके पास उसकी संगति में नहीं आ सकता। अक्सर जब किसी मनुष्य की मृत्यु हो जाती है, तो उसके सम्बन्धि या मित्र कहते हैं कि वह मनुष्य परमेश्वर के पास चला गया या वह स्वर्ग सिधार गया। परन्तु मित्रो, मैं आपको बताना चाहता हूं, कि परमेश्वर के साथ अपना मेल स्थापित किए बिना कोई भी मनुष्य उसके स्वर्ग में उसके पास नहीं पहुंच सकता। जब तक मनुष्य अपने पाप से छुटकारा न पा ले वह परमेश्वर के पास नहीं जा सकता। क्योंकि जिस प्रकार ज्योति और अंधकार की कोई संगति नहीं, उसी प्रकार धार्मिकता और अधर्म का कोई मेल-जोल नहीं। पापी मनुष्य पवित्र परमेश्वर के साथ नहीं रह सकता।

परन्तु अपने वचन की पुस्तक में न केवल परमेश्वर ने मनुष्य की

पापपूर्ण तथा खोई हुई दशा को ही बताया है, किन्तु उसने यह भी बताया है कि मनुष्य किस प्रकार अपने पाप से छुटकारा प्राप्त करके उसके पास वापस आ सकता है। और यही सुसमाचार है ! अर्थात्, पापी तथा खोया हुआ मनुष्य फिर से परमेश्वर के पास वापस आ सकता है; वह अपनी आत्मा को नरक में जाने तथा नाश होने से बचा सकता है ! "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा" पवित्र बाइबल कहती है, "कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

मित्रो, परमेश्वर आज जगत में प्रत्येक स्त्री तथा प्रत्येक पुरुष को अनन्त जीवन देना चाहता है। वह आज जगत में प्रत्येक मनुष्य का उसके पापों से उद्धार करना चाहता है। वह हर एक इंसान के पापों को दूर करके उसके साथ अपना मेल करना चाहता है। क्योंकि वह जगत में हर एक मनुष्य से प्रेम रखता है, और नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो। और इसलिए उसने अपने एकलौते पुत्र को जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर बलिदान होने को दे दिया। परन्तु वह कहता है, कि उसने जगत से प्रेम रखकर अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्या आप उस पर विश्वास करते हैं, कि वह आपके पापों के बदले में क्रूस पर मारा गया ? यीशु का सुसमाचार, वास्तव में विश्वास का सुसमाचार है। अपनी मृत्यु तथा जी उठने के बाद जब उसने अपने चेलों को सुसमाचार का प्रचार करने को जगत में भेजा तो उसने उनसे कहा, कि सुनकर "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १६)।

मित्रो, जिस प्रकार से यह सच है कि आज हम सब जीवित हैं, उसी प्रकार यह भी सच है कि एक दिन हम सबका न्याय परमेश्वर के वचनानुसार होगा। यदि आज हम उसके पुत्र पर विश्वास लाकर उसके सुसमाचार को नहीं मानते तो न्याय के दिन हम स्वयं अपने आपको ही दोषी ठहराएंगे। परन्तु परमेश्वर आपको बुद्धि दे कि आप उसके पुत्र में विश्वास लाएं और उस अनन्त जीवन को प्राप्त करें जिसे वह आज आपको और जगत में हर एक मनुष्य को देना चाहता है।

३

आशा का सुसमाचार

मित्रो :

हमारी भाषा में, या वास्तव में कहा जाए कि संसार की किसी भी भाषा में "निराशा" एक बड़ा ही अप्रिय शब्द है। आशा के साथ मनुष्य दुख सह सकता है, हानि तथा समस्याओं का सामना कर सकता है। परन्तु निराशा के कारण उसका हौंसला टूट जाता है। हमारे देश में और संसार में सभी जगह हर साल लाखों लोग किसी न किसी प्रकार की निराशा के कारण अपनी स्वयं हत्या कर लेते हैं। इस से हम देखते हैं कि निराशा मनुष्यों में सब जगह पाई जाती है। निराशा एक अंधकार के समान है, जिसमें मनुष्यों को कुछ भी नज़र नहीं आता। उस में वह अपने आप को व्यर्थ, अयोग्य और असहाय अनुभव करने लगता है। परन्तु आशा एक ज्योति के समान है, जिस में मनुष्य को एक अर्थ, एक मार्ग और एक सहारा मिल जाता है। मैं सोचता हूं, कि हम में से हर एक का कभी न कभी ऐसा अनुभव अवश्य हुआ होगा कि हम अपनी राह में भटक गए हों। उस समय हम अपने आप को खोया हुआ महसूस करने लगते हैं। और फिर बहुतों से पूछने के बाद भी जब हमें अपने मार्ग का पता नहीं लगता तो हम निराश हो जाते हैं। परन्तु तभी अचानक कोई उधर आ निकलता है और वह हमें न केवल हमारे स्थान का पता ही बताता है परन्तु हमें वहां तक पहुंचाने के लिये वह हमारे साथ भी हो लेता

है। आप सोच सकते हैं कि ऐसी परिस्थिति में हमें कितनी खुशी और राहत और कितने आनन्द का अनुभव होगा। हमारा उदास मन प्रसन्न हो जाएगा, मुरझाया हुआ चिहरा खुशी से खिल उठेगा, और हमारी निराशा आशा में बदल जाएगी।

मित्रो, इस समय में आपको इसी प्रकार से एक आशा का सुसमाचार देने के लिये आया हूं। क्योंकि बाइबल कहती है, कि "हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह ५३ : ६)।

मित्रो, जो मनुष्य परमेश्वर से दूर और उस से अलग है, वह अन्धकार में है; क्योंकि परमेश्वर ज्योति है (१ यूहन्ना १ : ५), और जो मनुष्य अन्धकार में है, उसके पास कोई आशा नहीं है क्योंकि वह खोया हुआ अंधकार में भटक रहा है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि मनुष्य के अधर्म के कामों ने और पाप ने उसे परमेश्वर से अलग किया हुआ है। (यशायाह ५९ : १, २)। परमेश्वर का वचन कहता है, कि जगत में सब मनुष्यों ने पाप किया है और सारे मनुष्य परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३ : २३)। पाप एक बोझ है, जो मनुष्य को ऊपर उठने से रोकता है। और जगत में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिसने कभी कोई पाप न किया हो, अर्थात् पाप के बोझ ने हर एक इन्सान को अपने नीचे दबा रखा है। मनुष्य अपनी मेहनत से धनी बन सकता है, एक अच्छा कलाकार बन सकता है, परन्तु वह अपने आप को पाप के बोझ से मुक्ति नहीं दिला सकता। मनुष्य एक मनुष्य को धोखा देकर उस से क्षमा मांग सकता है। यदि मैं आप का अपराध करूं तो मैं आप से ही क्षमा मांग सकता हूं और केवल आप ही मुझे क्षमा कर सकते हैं। परन्तु हम सब ने परमेश्वर का अपराध किया है, हम सब ने परमेश्वर की

आज्ञाओं को तोड़ा है और उसके नियमों का उल्लंघन किया है। इसलिये हम सब परमेश्वर के सम्मुख अपराधी हैं। हम केवल उसी से क्षमा मांग सकते हैं और केवल वही हमें क्षमा दे सकता है। अपने प्रयत्नों से हम अपने आप को पाप के बोझ से छुटकारा नहीं दिला सकते, और यह सच्चाई बनी रहती है कि हम सब ने पाप किया है और परमेश्वर की संगति से रहित हैं। इसलिये पवित्र बाइबल में एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "दुखी होओ, और शोक करो, और रोओ-: तुम्हारी हंसी शोक में और तुम्हारा आनन्द उदासी में बदल जाए।" (याकूब ४ : ९)। मित्रो, आज जगत में करोड़ों लोग खुशी और आनन्द में मगन हैं, बहुतेरे जगत की वस्तुओं को प्राप्त करने में लीन हैं, परन्तु वे जानते नहीं कि कदाचित् आज ही उनकी ज़िन्दगी का अंतिम दिन हो, शायद, अगले हफ्ते, या अगले महिने या अगले वर्ष.....परन्तु तब क्या होगा ? क्या कोई पापी परमेश्वर की संगति को प्राप्त कर सकता है ? क्या एक अधर्मी परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश कर सकता है ? परन्तु यदि वह परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में नहीं जाएगा, तो फिर वह कहाँ जाएगा ? ऐसे मनुष्य की आत्मा का क्या होगा ? मित्रो, यह चिन्ता का विषय है। यह हमेशा की ज़िन्दगी और हमेशा की मौत का सवाल है। क्या आप वास्तव में सुन रहे हैं ?

किन्तु परमेश्वर की पवित्र बाइबल न केवल हमें यही बताती है, कि, "हम तो सब के सब भेड़ों की नाईं भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया।।" परन्तु फिर हमें परमेश्वर की इस पुस्तक में यह आशा का सुसमाचार मिलता है, कि परमेश्वर ने "हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" अर्थात् परमेश्वर ने अपने उस वचन के ऊपर, जिसे उसने मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया और जो उसका एकलौता पुत्र मसीह था, हम सभों के

अपराधों के बोझ को लाद दिया। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से उसने जगत के प्रत्येक पापी मनुष्य के लिये क्रूस पर मृत्यु का स्वाद चखा। (इब्रानियों २ : ९) न केवल परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक में हमें यही बताता है, कि हम सब ने पाप किया है और उसकी महिमा तथा संगति से रहित और अलग हैं। परन्तु फिर वह हमें यह आशा का सुसमाचार भी देता है, कि हम, "उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।" क्योंकि "उसे परमेश्वर ने उसके लोहू के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आना-कानी की; उन के विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे।" (रोमियों ३ : २३-२५)।

मित्रो पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता है, पाप मनुष्य को परमेश्वर के पास आने से रोकता है। पाप एक बोझ है जिसके कारण मनुष्य उठकर ऊपर परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता। पाप प्रत्येक मनुष्य के भीतर है। यह बात बड़ी ही निराशाजनक है। परन्तु परमेश्वर के पुत्र मसीह यीशु की मृत्यु जगत के सब लोगों के लिये एक आशा का सुसमाचार है। क्योंकि परमेश्वर ने उसे हम सब के पापों का प्रायश्चित बनाकर क्रूस पर लटकाया। वह उसकी इच्छा से हम सब के अधर्म के कामों के कारण बलिदान हुआ। परमेश्वर ने उसके ऊपर जगत के सारे पापों का बोझ रखकर उसे बलिदान कर दिया। इसलिये बाइबल कहती है, कि मसीह हमारा मेल है। (इफिसियों २:१४)। क्योंकि पाप वह वस्तु है जो मनुष्य को परमेश्वर से अलग करती है, और यीशु ने पाप के ही कारण अपना बलिदान दिया। पाप का दन्ड मृत्यु है (रोमियों ६:२३) और यीशु ने उसी दन्ड को जो परमेश्वर की ओर से प्रत्येक मनुष्य के

लिये निर्धारित था स्वयं अपने ऊपर ले लिया। अधर्म के जिस बोझ से मनुष्य दबा हुआ था, यीशु ने उस बड़े बोझ को अपने ऊपर लेकर मनुष्य को आज़ाद कर दिया। पाप की जिस दीवार के कारण परमेश्वर का मुंह मनुष्य से ऐसा छिपा था कि वह उसकी नहीं सुनता था (यशायाह ५९:२) यीशु ने उस दीवार को क्रूस पर अपना लोहू बहाकर तोड़ दिया। पाप का जो कर्ज़ा हमारे ऊपर था यीशु ने अपना लोहू बहाकर उसे पूरा कर दिया, अर्थात् उसने उस कर्ज़े को भर दिया, और इसलिये उसके कारण अब हमें अपनी आत्मा को खोने की आवश्यकता नहीं है।

मित्रो, प्रभु यीशु ने कहा है, "हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है।" (मत्ती ११: २८—३०)। यदि आप अपने आपको परमेश्वर के पुत्र यीशु को सौंप देंगे तो वह अवश्य ही आपके बोझ को अपने ऊपर ले लेगा। परन्तु वह अपना जूआ और अपने क्रूस का बोझ आपके ऊपर रख देगा। किन्तु वह कहता है, कि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है। क्या आप यीशु का जूआ अपने ऊपर लेकर और उसका बोझ उठाकर उसके पीछे चलने को तैयार हैं? वह आपके भारी बोझ को लेना चाहता है। उसकी आज्ञा है, कि आप उसमें विश्वास करें, और प्रत्येक पाप से अपना मन फिराएं, और बपतिस्मा लेकर अपने वर्तमान पापी जीवन को हमेशा के लिये बपतिस्मे की जल-रूपी-कब्र के भीतर दफ़ना दें। (मरकुस १६:१६; लूका १३:३; रोमियों ६:१—६; प्रेरितों ८:३५—३९; कुलुस्सियों २:१२)।

परमेश्वर अपने वचनानुसार चलने के लिये आप को समझ दे।

प्रेम का सुसमाचार

मित्रो:

यदि आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व प्रभु यीशु अपने चेलों को यह आज्ञा देकर संसार में न भेजता कि, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" (मरकुस १६:१५)। तो आज इस कार्यक्रम की, और इस प्रोग्राम के द्वारा मुझे आपके सामने आकर इन बातों को पेश करने की, जो मैं आपको बताने जा रहा हूं, कोई आवश्यकता न होती। क्योंकि इस प्रोग्राम में यीशु मसीह के सुसमाचार के सिवाए हम आप को और कुछ नहीं बताना चाहते। क्योंकि हमारा विश्वास है, कि सबसे अधिक आपको यीशु मसीह के सुसमाचार की आवश्यकता है। हमें आपके मनोरंजन की नहीं परन्तु आपकी आत्मा की चिन्ता है। और आपकी आत्मा को नाश होने से केवल प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार ही बचा सकता है क्योंकि मसीह का सुसमाचार हर एक विश्वास लानेवाले के लिये उसके उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियों १:१६)। मसीह यीशु के सुसमाचार के अतिरिक्त जगत में कोई ऐसा मनुष्य नहीं है, और कोई ऐसी ताकत नहीं है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने पापों से छूटकर धर्मी बन जाए। क्योंकि परमेश्वर धर्मी है। उसमें कोई अधर्म नहीं है, उसमें कोई पाप नहीं है। वह पवित्र और धर्मी है। और मनुष्य यदि उसके स्वर्ग में प्रवेश करना चाहता है, तो अवश्य

है कि वह धर्मी बने। परन्तु मनुष्य पापी है। वह स्वयं धर्मी कभी भी नहीं बन सकता। किन्तु जिस काम को मनुष्य नहीं कर सकता उसे परमेश्वर कर सकता है।

एक बार एक मनुष्य प्रभु यीशु के पास यह जानने के लिये आया था, कि अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिये मैं क्या करूं? बाइबल का लेखक हमें बताता है, कि प्रभु ने उससे कहा, कि तू एक काम कर, कि जो कुछ तेरा है उसे तू बेचकर कंगालों को दे दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, और तू आकर मेरे पीछे हो ले। परन्तु यह बात सुनकर वह मनुष्य बड़ा ही उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा ही धनी था और अपने धन को किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहता था। इसलिये बिना कुछ कहे, वह यीशु के पास से चला गया। यीशु ने उसे जाते देखकर अपने चेलों से कहा, कि धनवानों का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है, "परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।"(मरकुस १०:२५)। चेले प्रभु की बात सुनकर बड़े ही चकित होकर आपस में कहने लगे कि यदि ऐसा है तो फिर किसका उद्धार हो सकता है? किन्तु यीशु ने उनसे कहा, कि, "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से हो सकता है; क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।" (मरकुस १०:२७)।

मित्रो, मनुष्य पापी है। वह अपने आप को पवित्र नहीं बना सकता। वह अधर्मी है, और अपने आपको धर्मी नहीं बना सकता। परन्तु परमेश्वर उसे पवित्र बना सकता, वह उसे धर्मी बना सकता है! और यही वास्तव में सुसमाचार है, एक खुश-ख़बरी है! अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्य को धर्मी बनाने के लिये अपने पुत्र यीशु मसीह को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। परमेश्वर ने उसे जगत के सारे पापों का प्रायश्चित ठहराकर क्रूस के ऊपर नाश कर दिया।

उसने जगत के सारे लोगों के पापों को लेकर यीशु के ऊपर रख दिया, और प्रत्येक पापी के लिये उसे पाप ठहराया, और हर एक अधर्म के काम के लिये उसे क्रूस के ऊपर दन्डित किया ताकि उसके कारण हम उद्धार पाएं और अनन्त विनाश के दन्ड से बच जाएं। मित्रो ये बात शायद आपमें से कुछ लोगों को विचित्र सी लगे, परन्तु पवित्र बाइबल में इस प्रकार लिखा है, "क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" (१कुरिन्थियों १:१८)।

मैं आपको आज बताना चाहता हूं, कि परमेश्वर की पुस्तक बाइबल यीशु के सम्बन्ध में कहती है, कि, "निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हम ने उसे परमेश्वर को मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सब के सब भेड़ों की नई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सबों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।" (यशायाह ५३:४-६)।

संसार का इतिहास इस बात का गवाह है कि आज से उन्नीस सौ साल पहिले पलस्तीन देश में रोमी और यहूदी लोगों ने एक निर्दोष मनुष्य को क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था। उन्होंने उसे ताड़ना दी उसे कोड़ों से पीटा, और लकड़ी के एक क्रूस पर उसे कीलों से जड़कर आकाश और पृथ्वी के बीच में मरने के लिये लटका दिया। और बाइबल कहती है, कि ये सब कुछ परमेश्वर की इच्छा और उसके होनहार के ज्ञान से इसलिये हुआ ताकि उस पर मार पड़ने से हमारे पापों का प्रायश्चित हो जाए। मित्रो, यह परमेश्वर के प्रेम का

सुसमाचार है ! वह चाहता है, कि उसके सुसमाचार के द्वारा सारे जगत के लोग जानें कि वह जगत में प्रत्येक मनुष्य से प्रेम करता है, और उसका प्रेम क्रूस के ऊपर प्रगट हुआ है। जहां उसने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने ही एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। जो दोष हमारा था उसके बदले में हमें दन्ड देने के विपरीत उसने अपने ही पुत्र को हमारा दन्ड दिया, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है। बाइबल में लिखा है, कि, "किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५ : ७, ८)। हां, मसीह हमारे लिये मरा। और वह मरा ताकि वह हमें पाप से छुटकारा दिला दे। अपने पुत्र यीशु की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर हमें धर्मी बनाना चाहता है, ताकि उसमें होकर हम धर्मी बन जाएं और उसके स्वर्ग के भीतर प्रवेश पाने के योग्य बन जाएं।

इसलिये बाइबल में हम एक जगह यों पढ़ते हैं, और मैं निवेदन करता हूं कि आप बड़े ही ध्यान से इसको सुनें, लिखा है : "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया···अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया···" किन्तु, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५:१७—१९, २१)।

मित्रो, आपके लिये यह परमेश्वर के प्रेम का सुसमाचार है, यही वह सुसमाचार है जिसका प्रचार प्रभु यीशु ने सारे जगत में करने की

आज्ञा दी थी। अर्थात, मनुष्य को बचाने के लिये परमेश्वर स्वयं मसीह में होकर ज़मीन पर उतर आया। वह मनुष्य का उद्धार करने के लिये इन्सान बना। और यद्यपि वह पाप से अज्ञात था तौभी वह आपके और मेरे लिये पाप बना। ताकि हम उसमें होकर, उसके बलिदान के द्वारा, परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। इसलिये, परमेश्वर का वचन कहता है कि अब जो मनुष्य मसीह में है वह एक नई सृष्टि है, एक नया इन्सान है। क्योंकि परमेश्वर जानता है कि उस मनुष्य के पापों का प्रायश्चित उसके पुत्र के बलिदान के द्वारा हो चुका है। अब वह पुराना मनुष्य नहीं है जिसके भीतर पाप और अधर्म बास करते थे, परन्तु उसने उस पुराने इन्सान को मसीह में विश्वास लाकर और अपना मन फिराकर और बपतिस्मा लेकर उतार फेंका है। बाइबल में लिखा है, "कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी उसके साथ जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।" (रोमियों ६:३—६)।

क्या आप मसीह में हैं? यदि नहीं, तो परमेश्वर आप को यह सुसमाचार देता है, कि आप उसके पुत्र में विश्वास लाकर और पाप से अपना मन फिराकर और उसका बपतिस्मा लेकर एक नई सृष्टि बन सकते हैं। परमेश्वर आपको प्रेम करता है। वह, आपको बचाना चाहता है। सो देरी न करें। जीवन छोटा है, परन्तु अनन्तकाल बहुत बड़ा है, और परमेश्वर की इच्छा है कि आप हमेशा उसके साथ रहें।

अनुग्रह का सुसमाचार

मित्रो :

इस कार्यक्रम में आप परमेश्वर के उस सुसमाचार को सुनते हैं जिसके बारे में हमें बाइबल में मिलता है। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर ने जगत के सब लोगों से ऐसा प्रेम रखा कि उसने उन्हें पाप से मुक्ति दिलाने के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया। परमेश्वर का पुत्र उसका वह सामर्थी वचन था जिसके द्वारा उसने सारे जगत को उत्पन्न किया था। परन्तु जगत को पाप में देखकर उसने उसे मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। वह पृथ्वी पर इसलिये आया ताकि परमेश्वर की इच्छानुसार वह अपने आपको जगत के सब लोगों के पापों के लिये बलिदान करके पापों का प्रायश्चित बन जाए। आज से उन्नीस सौ साल पहिले यरुशलेम के खोपड़ी नामक स्थान पर जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था तो वह आपके और सारे जगत के पापों का प्रायश्चित ठहराया गया था। परमेश्वर की इच्छा है और वह चाहता है कि पृथ्वी पर सारे लोग उसके इस सुसमाचार को जानें। इस कार्यक्रम का एकमात्र उद्देश्य आपको परमेश्वर के इस सुसमाचार से परिचित कराना है। परमेश्वर के पुत्र मसीह ने आज्ञा देकर कहा था कि इस सुसमाचार का प्रचार सारे जगत में और सृष्टि के सारे लोगों में किया जाए। यह सुसमाचार आवश्यक है, महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसके बिना किसी भी मनुष्य का

उद्धार नहीं हो सकता। बाइबल कहती है, कि परमेश्वर का यह सुसमाचार हर एक मनुष्य के उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है। यह उसके अनुग्रह का सुसमाचार है। प्रत्येक मनुष्य जो इस सुसमाचार को जानता है और इससे परिचित है, उसका यह कर्त्तव्य है कि वह इसके बारे में अन्य लोगों को बताए। प्रेरित पौलुस बाइबल में एक जगह लिखकर यों कहता है, कि, "मैं यूनानियों का और अन्य-भाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्ज़दार हूं। सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूं। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये परमेश्वर की सामर्थ है।" (रोमियों १:१४—१६)। और एक अन्य स्थान पर वह फिर कहता है, "परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता: कि उसे प्रिय जानूं, बरन यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवकाई को पूरी करूं, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।" (प्रेरितों २०:२४)।

मैं आज आपको बताना चाहता हूं, मित्रो, कि प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार है। जब उसके पुत्र का जन्म हुआ था, तो बाइबल में लिखा है, "और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया···क्योंकि उसकी परिपूर्णता से हम सबने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।" (यूहन्ना १:१४, १६)। इसका अर्थ यह है, कि जब यीशु का जन्म हुआ था, तो वह परमेश्वर के अनुग्रह तथा उसकी सच्चाई से परिपूर्ण था। उसके द्वारा और उसमें परमेश्वर ने जगत पर अपने अनुग्रह को प्रगट किया। अनुग्रह का अर्थ है, एक ऐसी भलाई जिसके बदले में कुछ भी नहीं किया जा सकता, एक ऐसा बरदान जिसे कुछ भी करके या जिसके बदले में कुछ भी देकर प्राप्त

नहीं किया जा सकता। या जैसे कि बाइबल कहती है, कि, "परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:८)। अर्थात्, अनुग्रह वह वस्तु है जिसका दाम नहीं चुकाया जा सकता और जिसे किसी भी प्रकार का प्रयत्न करके हासिल नहीं किया जा सकता। यीशु मसीह परमेश्वर का अनुग्रह है, और उसकी मृत्यु मनुष्य के लिये परमेश्वर के अनुग्रह का सुसमाचार है। क्योंकि यदि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम न रखता तो वह अपने पुत्र को जगत में न भेजता। और यदि उसे मनुष्य की आत्मा को बचाने की चिन्ता न होती तो वह अपने पुत्र को जगत के पापियों के लिये क्रूस पर चढ़वाकर उसके बलिदान के द्वारा जगत के पापों का प्रायश्चित न करवाता। सो हम देखते हैं, कि इन सब बातों का कारण परमेश्वर का अनुग्रह था। क्योंकि वह चाहता है कि हम में से कोई भी अपने पापों में नाश न हो परन्तु उसके अनुग्रह से अनन्त जीवन प्राप्त करे। बाइबल का लेखक कहता है "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चिताता है, कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं। और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिसने अपने आपको हमारे लिये दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो।" (तीतुस २:११—१५)। "क्योंकि हम भी पहिले, निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए, और रंग-रंग की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैर-भाव, और डाह करने में जीवन निर्वाह करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से

बैर रखते थे। पर जब हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर की कृपा, और मनुष्यों पर उसकी प्रीति प्रगट हुई, तो उसने हमारा उद्धार किया : और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हमने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म के स्नान, और पवित्रात्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ। जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला। जिस से हम उसके अनुग्रह से धर्मी ठहरकर, अनन्त जीवन की आशा के अनुसार वारिस बनें।" (तीतुस ३:३—७)।

सो, बाइबल में लिखी इन बातों से हम यह सीखते हैं, कि हमारे उद्धार का कारण हमारे अपने काम या प्रयत्न नहीं हैं परन्तु परमेश्वर का वह अनुग्रह है जो उसके पुत्र के द्वारा क्रूस पर प्रगट हुआ। परन्तु इसका अर्थ क्या है ? क्या इसका अर्थ यह है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से जगत के सारे लोगों का उद्धार हो चुका है ? क्या इसका अर्थ यह है, कि उसके अनुग्रह से जगत के सारे लोग उसके स्वर्ग में प्रवेश करेंगे ? क्या इसका अर्थ यह है, कि मनुष्य चाहे जैसा भी जीवन व्यतीत करे उसका उद्धार हो जाएगा, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट हुआ है ? या क्या इसका अर्थ यह है, कि मनुष्य को परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य ठहरने के लिये कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है ? हम में से जो माता-पिता हैं हम अपने बच्चों को खाना, कपड़ा और उनकी आवश्यकता की सभी चीज़ें देते हैं, और यहां तक कि कभी-कभी उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये हमें अपनी आवश्यकताओं को भी भूलना पड़ता है। क्योंकि हम उनसे प्रेम करते हैं। हम स्वयं दुखी होकर उन्हें सुखी देखना चाहते हैं। इसलिये नहीं कि हमें उनसे कुछ लालच है, या उन्होंने हमारे लिये कुछ किया है, परन्तु केवल इसलिये क्योंकि हम अपने बच्चों से प्रेम रखते हैं। और जो वस्तुएं वे हम से प्राप्त करते हैं वे

अनुग्रह के समान उनके लिये मुफ्त ठहरती हैं। परन्तु क्या हम अपने बच्चों से कुछ भी नहीं चाहते ? हम चाहते हैं कि वे हमारा आदर करें और हमारी आज्ञा मानें। ठीक यही बात परमेश्वर के अनुग्रह के सम्बन्ध में भी हम देखते हैं। उसने दुख उठाकर हम पर अपने अनुग्रह को प्रगट किया, अर्थात् उसने अपने एकलौते पुत्र को हमारे लिये बलिदान कर दिया, ताकि हम उद्धार पाएं। परन्तु वह चाहता है कि हम उसका आदर करें, और आदर क्योंकि आज्ञा मानकर ही प्रगट किया जा सकता है, सो वह चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं पर चलें। सो न केवल बाइबल हमें परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में ही बताती है, परन्तु इस पुस्तक में यह भी बताया गया है कि परमेश्वर के अनुग्रह के योग्य ठहरने के लिये हमें क्या करना चाहिए।

सबसे पहिले, बाइबल में लिखा है, कि हमें परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए। (इब्रानियों ११:६)। फिर बाइबल कहती है, कि परमेश्वर की इच्छा है, कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह में विश्वास लाएं। (यूहन्ना ३:१६)। और फिर परमेश्वर की आज्ञा है, कि हम में से हर एक अपना-अपना मन फिराए। (प्रेरितों १७:३०, ३१)। और ऐसा करने के बाद परमेश्वर अपनी पुस्तक के द्वारा कहता है, कि हम में से हर एक को अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। (प्रेरितों २:३८; २२:१६)। बपतिस्मा लेने का अर्थ है, अपने वर्तमान जीवन को जल-रूपी कब्र के भीतर सदा के लिये दफ़ना देना, जैसे कि एक मरा हुआ इन्सान कब्र के भीतर गाड़ा जाता है, और उस जल में से बाहर निकलकर नए जीवन में प्रवेश करना (यूहन्ना ३:३, ५; प्रेरितों ८:३५—३९)। और फिर वह चाहता है, कि हम उसके पुत्र मसीह में एक नए जीवन की चाल चलें (रोमियों

६:३—६), जो उसकी इच्छा तथा आज्ञानुसार है।

मित्रो, परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट है, और वह चाहता है कि हम में से प्रत्येक जन उसके अनुग्रह से उद्धार पाए।

यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप और अधिक जानकारी चाहते हैं, तो हमें लिखकर सूचित करें। प्रभु आप सब को अपनी आशीष दे।

मेल का सुसमाचार

मित्रो :

पवित्र बाइबल कहती है कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। जिस परमेश्वर के बारे में मैं आपसे कह रहा हूं, वह कोई पत्थर या मिट्टी का परमेश्वर नहीं है। जिस परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपने आप को जगत के लिये खाली कर दिया, वह कोई सोने और चाँदी का परमेश्वर नहीं है। परन्तु बाइबल में जिस परमेश्वर के बारे में हमें मिलता है, वह एक सच्चा और जीवता परमेश्वर है। वह सामर्थपूर्ण परमेश्वर है। वह देखता है, सुनता है, और महसूस करता है। वह प्रसन्न होता है और दुखी होता है। वह सारे जगत का परमेश्वर है। उसने सारे जगत की सृष्टि की है। उसने आपको और मुझे और जगत के सारे लोगों को जीवन दिया है। वह हम सबको खुश देखना चाहता है। उसे हमारे सुख की चिन्ता है। और सबसे अधिक उसे हमारी आत्माओं की चिन्ता है। वह जानता है कि जगत में प्रत्येक मनुष्य अपने पाप और अधर्म के कारण उस से दूर और अलग है। वह जानता है, कि मनुष्य यदि इस जीवन में अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके अपना मेल उसके साथ नहीं कर लेता, तो वह हमेशा के लिये उससे अलग

होकर नरक के उस अंधकार में रहेगा जहां से कभी कोई छुटकारा नहीं हो सकता। वह यह भी जानता है, कि मनुष्य क्योंकि पापी है इसलिये वह स्वयं अपने पापों से छुटकारा पाकर उसके पास नहीं आ सकता। वह जानता है, कि जगत में प्रत्येक मनुष्य पाप और अधर्म की मज़बूत रस्सियों से बन्धा हुआ है जिसे खोलनेवाला संसार में कोई नहीं है। परन्तु, वह मनुष्य से प्रेम रखता है। क्योंकि उसने उसे आरम्भ में अपने आत्मिक स्वरूप तथा अपनी आत्मिक समानता पर बनाया था।

सो वह मनुष्य का छुटकारा करने के लिये स्वयं पृथ्वी पर आ गया। वह मनुष्य के साथ अपना मेल करने के लिये स्वयं जगत में आ गया। उसने अपने सामर्थी वचन को मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर भेज दिया। मित्रो, आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व यरूशलेम नगर में यीशु मसीह नाम के एक निर्दोष मनुष्य को डाह और ईर्ष्या के कारण क्रूस पर लटकाकर मारा गया था। वह मनुष्य और कोई नहीं परन्तु स्वयं वही वचन था जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के रूप में जगत में भेजा था। ये शब्द, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए" किसी और मनुष्य के मुंह से नहीं निकले, परन्तु उसी यीशु मसीह के ये शब्द हैं जिसे लोगों ने क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला था। वह जानता था कि वह जगत में क्यों आया है। उसे मालूम था कि वह परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान किया जाएगा। इसलिये उसने अपने पक्ष में कुछ भी न कहा, परन्तु अपने आपको उनके हवाले कर दिया ताकि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

यीशु के वे सब बड़े-बड़े समार्थ के काम इस बात के गवाह हैं

कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। और उसके परमेश्वर के पुत्र होने का सबसे बड़ा प्रमाण हमें इस बात में मिलता है, कि परमेश्वर ने उसकी मौत के बाद तीसरे दिन उसे फिर जिलाकर खड़ा कर दिया। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है। इस सच्चाई का कोई इंकार नहीं कर सकता। क्योंकि तीसरे दिन यीशु की कब्र यरुशलेम में खाली पाई गई थी। और इसके बाद चालीस दिन तक वह पृथ्वी पर लोगों को दिखाई देता रहा। उन्होंने उसे छुआ और उससे बातें कीं। परन्तु इससे पहिले कि वह देहधारी वचन पृथ्वी पर से वापस स्वर्ग पर उठाया जाता, उसने उन लोगों से कहा, कि तुम इस सुसमाचार को सारे जगत में पृथ्वी के सारे लोगों के पास पहुंचा दो।

इस घटना को घटे आज उन्नीस सौ साल बीत चुके हैं, परन्तु जिस सुसमाचार को प्रचार करने की आज्ञा उस समय यीशु ने दी थी वह आज भी संसार के कोने-कोने में प्रचार किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के द्वारा हम आज भी आपके सामने उन्नीस सौ साल पुराने उसी सुसमाचार को प्रस्तुत कर रहे हैं। हम आप को बता रहे हैं, कि परमेश्वर आप से प्रेम करता है। वह आपको नाश होने से बचाना चाहता है। वह आप के साथ अपना मेल करना चाहता है। उसने जगत के सारे लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान किया है। वह चाहता है, कि आप जानें कि उसने अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा आपके पापों का प्रायश्चित कर दिया है। अब आप, जो पाप और अधर्म के कारण उस से दूर थे, उसके पुत्र की मृत्यु के कारण उसके पास आ सकते हैं।

मित्रो, जगत में मनुष्य की आत्मा से अधिक मूल्यवान और कोई

दूसरी वस्तु नहीं है। एक दिन इस वर्तमान संसार की प्रत्येक वस्तु नाश हो जाएगी। प्रत्येक वह वस्तु जिस से हमें प्रेम है नाश हो जाएगी। और यहां तक, कि मनुष्य की देह, जिस के लिये मनुष्य सब कुछ करता है, जिसे वह संवारता और सजाता है और जिसे वह प्रत्येक बीमारी और मृत्यु से बचाकर रखता है, वह भी मिट्टी में मिल जाएगी। और जो वस्तु बचेगी वह है मनुष्य की आत्मा, जो अनन्त-काल तक विद्यमान् रहेगी। परन्तु किस जगह ? आपकी आत्मा का अनन्त निवास स्थान कहां होगा ? परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है, कि सारे अधर्मी अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५ : ४६)। किन्तु धर्मी कौन है ? क्या संसार में एक भी ऐसा मनुष्य है जो परमेश्वर के समान धर्मी है ? परमेश्वर अपने वचन की पुस्तक में कहता है, कि कोई नहीं, एक भी नहीं, क्योंकि सब ने पाप किया है और सब के सब परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३ : १०, २३)।

परन्तु परमेश्वर प्रेम है। वह हमसे प्रेम करता है। हम धर्मी नहीं हैं। हम अपने आप को कुछ भी करके धर्मी नहीं बना सकते, परन्तु वह हमें धर्मी बना सकता है। सो इस कारण उसने हमारे लिये अपने देहधारी वचन को बिलदान किया, ताकि हम जानें कि वह हमसे प्रेम रखता है; वह हमें बचाना चाहता है; वह हमें धर्मी बनाकर अपने साथ हमारा मेल करना चाहता है, ताकि हम अनन्त जीवन में प्रवेश करें। और अब मैं आपके सामने इस सम्बन्ध में पवित्र बाइबल में से पढ़ने जा रहा हूं। मेरा निवेदन है कि आप पवित्र वचन में लिखी इन बातों को ध्यान लगाकर सुनें। लेखक यहां पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर यों कहता है :

"हम जानते हैं, कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के आधीन हैं : इसलिए कि हर एक मुंह बन्द किया

जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे । क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है । पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं । अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं । इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं । परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं । उसे परमेश्वर ने उसके लोहु के कारण एक ऐसा प्रायश्चित ठहराया, जो विश्वास करने से कार्यकारी होता है, कि जो पाप पहिले किए गए, और जिनकी परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता से आनाकानी; उनके विषय में वह अपनी धार्मिकता प्रगट करे ।" "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें । जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुंच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमन्ड करें । केवल यही नहीं, बरन हम क्लेशों में भी घमन्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है । और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है । क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा । किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे । परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा । सो जबकि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे ?

क्योंकि बैरी होने की दशा में तो उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएंगे ?" (रोमियों ३ : १९—२५; ४ : १—१०)।

सो मित्रो, बाइबल हमें एक मेल का सुसमाचार देती है, अर्थात् हम प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जो हमारे पापों का प्रायश्चित बना, परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, कि संसार में जो कोई भी मनुष्य इस बात पर विश्वास लाएगा कि परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह मेरे पापों के बदले में मर गया, और अपने सब पापों से मन फिराकर उनकी क्षमा के लिए बपतिस्मा लेगा, वह अपने सब पापों से उद्धार पाएगा। (मरकुस १६ : १६; प्रेरितों २ : ३८)। बाइबल कहती है, कि बपतिस्मे के द्वारा मनुष्य जल के भीतर दफ़नाया जाता है, और बपतिस्मा लेकर मनुष्य मसीह के भीतर आ जाता है। (रोमियों ६ : ३, ४; प्रेरितों ८ : ३६-३९; गलतियों ३ : २७)। और फिर बाइबल में हम यों पढ़ते हैं, "सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया··· अर्थात् परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल-मिलाप कर लिया, और उनके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया।" (२ कुरिन्थियों ५ : १७-१९)।

परमेश्वर आपका उद्धार करना चाहता है। वह आपके साथ अपना मेल करना चाहता है। क्या आप उसकी इच्छा पर चलने को तैयार हैं ? यदि आप इन बातों के सम्बन्ध में कदम उठाना चाहते हैं या अधिक जानकारी पाना चाहते हैं, तो अभी हमारा जो पता आपको बताया जाएगा उस पर हमें लिखें।

ज्योति का सुसमाचार

मित्रो :

सत्य सुसमाचार के इस कार्यक्रम में आप परमेश्वर के इस सुसमाचार को सुनते हैं, कि उसने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि मनुष्य को पाप के भीतर नाश होने से बचाने के लिए उसने अपने एकलौते पुत्र को क्रूस के ऊपर बलिदान कर दिया। परमेश्वर का पुत्र उसका वचन था, जो आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व उसकी इच्छा तथा सामर्थ से जगत का उद्धार करने के लिए पृथ्वी पर आया था। पवित्र बाइबल में इस सम्बन्ध में हम इस प्रकार पढ़ते हैं : "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उसमें जीवन था; और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। और ज्योति अंधकार में चमकती है; और अंधकार ने उसे ग्रहण न किया। एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आ उपस्थित हुआ जिसका नाम यूहन्ना था। यह गवाही देने आया, कि ज्योति की गवाही दे, ताकि सब उसके द्वारा विश्वास लाएं। वह आप तो वह ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिये आया था। सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी। वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न

हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लोहू से, न शरीर की इच्छा से, परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं। और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।" "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है; वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए। परन्तु जो सच्चाई पर चलता है, वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वे परमेश्वर की ओर से किए गए हैं।" (यूहन्ना १ : १-१४; ३ : १६-२१)।

ये सब बातें अभी मैंने आपके सामने पवित्र बाइबल में से इसलिए पढ़ीं ताकि आप जान लें कि जिस यीशु मसीह का प्रचार हम आपके सामने करते हैं वह वास्तव में कौन है। बाइबल कहती है, कि वह

पृथ्वी पर आने से पहिले परमेश्वर का वही वचन था जिसके द्वारा उसने सारी सृष्टि को बनाया था। बाइबल कहती है, कि यीशु ज्योति है। वह जगत पर ज्योति की नाईं प्रगट हुआ। ज्योति का काम है मार्ग दिखाना और यीशु हमें परमेश्वर का मार्ग दिखाने को प्रगट हुआ। मनुष्य जानता था कि वह पापी है और अपने अधर्म के कारण परमेश्वर की महिमा से रहित है। वह अपने आपको पवित्र बनाने के लिए पूजा-पाठ करता था। वह अपने पापों का प्रायश्चित करने के लिए अपने आपको दुख देता था, जंगलों में भटकता था। वह परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए भिन्न-भिन्न काल्पनिक देवी-देवताओं को चढ़ावे चढ़ाता था। परन्तु मनुष्य अंधकार में था। उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि पाप के रहते वह पवित्र परमेश्वर के सम्मुख पापों की क्षमा प्राप्त करने नहीं आ सकता। क्योंकि जब तक मनुष्य के भीतर पाप है, परमेश्वर उसे सुन नहीं सकता, क्योंकि पाप एक ऐसी दीवार की नाईं है जिसके कारण परमेश्वर का मुंह मनुष्य से छिपा हुआ है। (यशायाह ५९:१२-)। मनुष्य इस बात से अज्ञान था, कि वह स्वयं कुछ भी करके अपने पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकता, क्योंकि परमेश्वर के सम्मुख मनुष्य के धर्म के काम मैले चिथड़ों के समान हैं। (यशायाह ६४:६)। मनुष्य अंधकार में था, वह परम-आत्मा को अपनी शारीरिक आंखों से देखना चाहता था और उसे भौतिक वस्तुओं के चढ़ावे चढ़ाकर प्रसन्न करना चाहता था। और इसलिए उसने अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य और पक्षियों और चौपायों, और पशुओं तथा सृष्टि की अन्य वस्तुओं की मूरतों की समानता में बदल डाला।

परन्तु, प्रभु यीशु मसीह के जगत में आने से सारा अंधकार दूर हो गया। क्योंकि उसके द्वारा मनुष्य को यह ज्ञान मिला कि परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसकी अराधना करनेवाले उसकी

उपासना उसके वचन की सच्चाई तथा आत्मा के साथ करें। (यूहन्ना ४ : २४)। वह जगत में इसलिये आया ताकि जगत उस के द्वारा उद्धार पाए और मनुष्य उसके द्वारा अपने पापों से छूटकर परमेश्वर के पास आ सके। प्रभु यीशु मसीह के जगत में आने से मनुष्य को यह ज्ञान मिला कि वास्तव में परमेश्वर प्रेम है। क्योंकि उसने मनुष्य को बताया कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने संसार के सब लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को पृथ्वी पर बलिदान होने को दे दिया। ताकि उसके बलिदान के द्वारा प्रत्येक मनुष्य उसमें होकर परमेश्वर के सम्मुख धर्मी बन जाए और उसे परमेश्वर के पास आने का हियाव हो। उसने मनुष्य को आत्मिक ज्ञान दिया। उसने सिखाया कि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है, जो मन के दीन हैं। और जिन्हें आत्मिक शोक है वे शान्ति पाएंगे। और जो नम्र हैं वे वास्तव में पृथ्वी पर राज करेंगे। उसने सिखाया कि धर्म के भूखे और प्यासे तृप्त किए जाएंगे, और जो दयावन्त हैं उन पर परमेश्वर दया करेगा। उसने मनुष्य को सिखाया कि परमेश्वर को केवल वही लोग देखेंगे जिन के मन शुद्ध हैं, और जो उसके सुसमाचार के द्वारा मेल करवाते हैं वे उसके संतान कहलाएंगे। उसने कहा, कि लोग अपने मित्रों से प्रेम रखते हैं परन्तु अपने शत्रुओं से बैर, लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और जो तुम्हें सताते हैं उनके लिये प्रार्थना करो। उसने सिखाया, कि तुम अपने धर्म के काम लोगों को दिखाने के लिये मत करो। उसने कहा, कि तुम अपना धन पृथ्वी पर इकट्ठा न करो जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और चोर चोरी करके ले जाते हैं, परन्तु स्वर्ग में इकट्ठा करो। और सब वस्तुओं से पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो तो अन्य सब आवश्यक वस्तुएं भी परमेश्वर तुम्हें देगा। उसने सिखाया कि अनन्त जीवन का द्वार

सकेत है और उसका मार्ग सकरा है, परन्तु विनाश को पहुंचानेवाला मार्ग चाकल है और उसका फाटक चौड़ा है। (मत्ती ५,६,७)।

मित्रो, न केवल यीशु ने मनुष्य को आत्मिक ज्ञान ही दिया, परन्तु उसने परमेश्वर की इच्छा से जगत के पापों का प्रायश्चित करने के लिये अपने आपको क्रूस की मौत के हवाले भी कर दिया। ताकि मनुष्य अब आगे को अंधकार में न रहे परन्तु वास्तव में जान ले कि परमेश्वर का वचन यीशु ही जीवन का वह मार्ग है जो उसे परमेश्वर के पास पहुंचा सकता है। परमेश्वर नहीं चाहता कि अब हम आगे को अंधकार में रहें, परन्तु उसकी इच्छा है कि हम सब उस की उस ज्योति के पास आएं जिसे उसने जगत पर प्रगट किया है। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह यूं कहता है, "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७ : ३०, ३१)।

जी हां, न केवल परमेश्वर की इच्छा से उसका पुत्र क्रूस के ऊपर मारा ही गया, परन्तु उसी की सामर्थ से वह अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद फिर से जी भी उठा। और इस से पहिले कि वह स्वर्ग में फिर से वापस उठाया जाता, उसने अपने चेलों को यह आज्ञा देकर भेजा, कि, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।" अर्थात् लोगों को बताओ कि उन्हें अब पाप तथा अंधकार में रहने की आवश्यकता नहीं हैं। क्योंकि परमेश्वर ने प्रत्यक्ष में प्रगट कर दिया है कि वह सारे जगत से प्रेम करता है, और सब को बचाना चाहता है, और उसने सब लोगों के

पापों का प्रायश्चित क्रूस पर अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा कर दिया है। और उसने आगे कहा, कि इस सुसमाचार को सुनकर जो विश्वास लाए तुम उसे पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा देना। क्योंकि जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा परन्तु जो विश्वास न लाएगा वह अपने पापों में नाश होगा। (मत्ती २८ : १९; मरकुस १६ : १५,१६)।

मित्रो, प्रभु यीशु का सुसमाचार हमारे लिये ज्योति का सुसमाचार है। वह अंधकार को हम से दूर करता है और परमेश्वर के पास आने में हमारी अगुवाई करता है। मेरा विश्वास है कि आप अवश्य ही इसे स्वीकार करेंगे। क्योंकि आपकी आत्मा को इसकी आवश्यकता है।

प्रभु आप को अपने वचनानुसार चलने के लिये शक्ति दे।

सामर्थ का सुसमाचार

मित्रो :

मनुष्य ऐसी वस्तुओं से बड़ा ही अधिक प्रभावित तथा आकृषित होता है जो मज़बूत और पक्की और ताकतवर तथा सामर्थी होती हैं। हरएक वस्तु को खरीदने से पहिले हम यह जानना चाहते हैं कि वह मज़बूत है या नहीं। यद्यपि हम चीज़ सस्ती ही खरीदना चाहें तौभी खरीदना पक्की ही चाहते हैं। मनुष्य की इसी प्रवृत्ती के कारण हम देखते हैं कि विभिन्न वस्तुओं के निर्माता अपनी चीज़ों की ओर लोगों को आकृषित करने के लिये उनकी मज़बूती और ताकत के विज्ञापन देते हैं। साईकल हो या टायर; खाने-पीने की चीज़ें हों या प्रतिदिन के इस्तेमाल की, प्रत्येक वस्तु की विशेषता प्रगट करने के लिये उसकी मज़बूती और सामर्थ के विज्ञापन दिए जाते हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि मनुष्य किसी भी ऐसी वस्तु का निर्माण नहीं कर सकता जो परमेश्वर की बनाई वस्तुओं से अधिक शक्तिशाली, मज़बूत तथा सामर्थी हो। मनुष्य की बनाई बिजली फ़ेल हो जाती है, परन्तु परमेश्वर का बनाया प्रकाश कभी समाप्त नहीं होता। कारखानों में बने बल्ब फ्यूज़ हो जाते हैं, परन्तु परमेश्वर की बनाई ज्योतियां हमेशा जलती रहती हैं। मनुष्य की बनाई घड़ियां खराब हो जाती हैं, परन्तु परमेश्वर द्वारा निरधारित समय कभी नहीं बदलते। पेड़-पौधों में और फूल-पत्तों में और परमेश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि में हम उसकी बेमिसाल सामर्थ को प्रति दिन देखते हैं।

परन्तु यदि आप परमेश्वर की सामर्थ को वास्तव में पहिचानना चाहते हैं, तो इस थोड़े से समय में मैं आपका ध्यान कलवरी के उस क्रूस के ऊपर दिलाना चाहूंगा जहां उसने मनुष्य की आत्मा को बचाने के लिये अपनी अद्भुत सामर्थ को प्रगट किया। मनुष्य भौतिक भी है, तथा आत्मिक भी, अर्थात् वह शारिरिक है तथा आत्मा भी। और जिस प्रकार वह परमेश्वर के सामर्थ के कामों के बिना शारीरिक रूप से ज़िन्दा नहीं रह सकता, वैसे ही यदि परमेश्वर अपनी सामर्थ को क्रूस के ऊपर प्रगट नहीं करता तो वह आत्मिक दृष्टिकोण से भी सदा के लिये नाश हो जाता। मेरे कहने का अभिप्राय यह है, कि यदि परमेश्वर उस बीज को, जिसे हम भूमि में डालते हैं, अपनी सामर्थ से पौधा और पेड़ न बनाए और अपनी वर्षा और प्रकाश को भेजकर उसे फलदायी न बनाए, तो हम में से एक भी ज़िन्दा नहीं रह सकता। और इसी प्रकार यदि वह अपनी सामर्थ से अपने वचन को मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर न भेजता और फिर अपने होनहार के ज्ञान से उसे क्रूस पर चढ़वाकर हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान न करता, तो हम सब अपने ही पापों में नाश हो जाते।

मनुष्य पापी है। प्रत्येक मनुष्य पापी है। पाप का अर्थ है, परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करना या उसकी इच्छानुसार न चलना। प्रत्येक मनुष्य जिस तरह पैदा हुआ है वैसे ही एक दिन अवश्य मरेगा भी। मृत्यु का अर्थ है आत्मा तथा शरीर का अलग होना अर्थात् आत्मा का शरीर को छोड़कर चले जाना। मनुष्य का शरीर भौतिक है। क्योंकि पवित्र बाइबल हमें बताती है कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को भूमि की मिट्टी से बनाया था। इसलिये शरीर नाशमान है, अर्थात् वह नाश हो जाएगा। परन्तु आत्मा मनुष्य को परमेशवर की ओर से मिला है। जब परमेश्वर ने मनुष्य को आरम्भ में सृजा था तो उसने मनुष्य को पशुओं की तरह केवल एक प्राणी ही

नहीं बनाया। परन्तु उसने मनुष्य को अपने जीवन का श्वास दिया, अर्थात उसे अपने आत्मिक स्वरूप तथा समानता पर उत्पन्न किया। इसलिये वह एक आत्मिक प्राणी है। परन्तु, आत्मा का क्या होगा ? अर्थात, मनुष्य का शरीर तो नाशमान है। और वह नाश हो जाएगा परन्तु मृत्यु के पश्चात् मनुष्य की आत्मा का क्या होगा ? बहुतेरे लोग सोचते हैं कि मृत्यु के बाद प्रत्येक मनुष्य की आत्मा परमेश्वर के पास पहुंच जाती है। परन्तु यह कैसे हो सकता है ? पवित्र बाइबल कहती है, कि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल-जोल ? या ज्योति और अंधकार की क्या संगति ? (२ कुरिन्थियों ६ : १४)। मनुष्य पापी है, और परमेश्वर पवित्र है। इसलिये पाप के रहते मनुष्य परमेश्वर के पास कदापि नहीं पहुंच सकता।

परन्तु परमेश्वर मनुष्य से प्रेम करता है। वह पाप से घृणा करता है, परन्तु मनुष्य से प्रेम करता है। वह पाप के साथ संगति नहीं कर सकता, परन्तु वह मनुष्य के साथ संगति रखना चाहता है। इसलिये परमेश्वर की पुस्तक बाइबल के द्वारा हमें उसकी सामर्थ का यह सुसमाचार मिलता है, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। इसका अर्थ यह है, कि परमेश्वर मनुष्य से प्रेम रखता है और वह मनुष्य को अनन्त जीवन देना चाहता है। उसने मनुष्य के साथ ऐसा प्रेम रखा कि उसने जगत के पापों के प्रायश्चित के लिये अपना एकलौता पुत्र दे दिया। उसने अपने पवित्र वचन को इन्सान बनाकर धरती पर भेज दिया, और बाइबल कहती है, कि, "किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी

ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:७,८)। अर्थात् परमेश्वर ने हमें धर्मी ठहराने के लिये हमारे अधर्म तथा पाप के कारण उसे दोषी ठहराया जो पाप से अज्ञात था और उसे हमारे पापों के बदले में क्रूस पर चढ़वाकर दन्ड दिया, ताकि हम उसमें होकर या उसके द्वारा परमेश्वर के सम्मुख धर्मी बन जाएं। (२कुरिन्थियों ५:२१)।

मित्रो, परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह, बाइबल कहती है, हम सबके पापों का प्रायश्चित है। (१ यूहन्ना २:२)। उसे परमेश्वर ने हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर बलिदान किया। वह लकड़ी के उस भारी क्रूस के ऊपर कीलों से ठोंका गया, उस पर मार पड़ी, और उसका निरादर किया गया—और यह सब कुछ इसलिये हुआ ताकि उसके द्वारा हमारे सब पापों का प्रायश्चित हो जाए। ताकि हम इस जीवन में उसके पुत्र के बलिदान के द्वारा अपने पापों से छुटकारा पा लें और फिर धर्मी बनकर अनन्तकाल तक उसके साथ रहें। परमेश्वर आपसे प्रेम रखता है, वह अनन्तकाल तक आपके साथ रहना चाहता है। परन्तु वह पाप के साथ नहीं रह सकता। सो वह कहता है, कि आप उसके उस एकलौते पुत्र में विश्वास करें जो आप के पापों के बदले में और आपके पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मारा गया। क्या आप उस पर विश्वास करते हैं? क्या आप यह स्वीकार करते हैं कि वह आपके पापों के बदले में क्रूस पर मारा गया? इसमें कोई संदेह नहीं, कि शताब्दियों से अनेकों लोग मसीह के क्रूस की कथा को मूर्खता की बात समझते आए हैं, परन्तु जिन लोगों को अपनी आत्मा को बचाने की चिन्ता है और जो लोग परमेश्वर तथा उसकी सामर्थ पर वास्तव में भरोसा रखते हैं वे जानते हैं कि क्रूस पर मसीह की मृत्यु जगत के लिये एक सुसमाचार है और वह सुसमाचार प्रत्येक विश्वास करनेवाले के लिये परमेश्वर की सामर्थ है। (रोमियों १:१६)। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह लिखकर कहता है :

"क्योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि लिखा है, कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा। कहां रहा ज्ञानवान ? कहां इस संसार का विवादी ? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया ? क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे। यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं। परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो यहूदियों के निकट ठोकर का कारण, और अन्य जातियों के निकट मूर्खता है। परन्तु जो बुलाए हुए हैं क्या यहूदी, क्या यूनानी, उनके निकट मसीह परमेश्वर की सामर्थ, और परमेश्वर का ज्ञान है। क्योंकि परमेश्वर की मूर्खता मनुष्यों के ज्ञान से ज्ञानवान हैं; और परमेश्वर की निर्बलता मनुष्यों के बल से बहुत बलवान है।" (१ कुरिन्थियों १ : १८-२५)।

मित्रो मैं आज आपके सामने उसी सामर्थ के सुसमाचार का प्रचार कर रहा हूं, जिसके द्वारा परमेश्वर जगत में हर एक मनुष्य का उद्धार करना चाहता है। परमेश्वर केवल एक है। और वह सारे जगत से प्रेम करता है। उसने सारे जगत के लिये अपने पुत्र को बलिदान करके मनुष्य के प्रति अपने प्रेम को प्रगट किया है। आज वह चाहता है कि अनन्त जीवन पाने के लिये जगत में प्रत्येक मनुष्य उसके एकलौते पुत्र में विश्वास लाए, और अपने-अपने पापों से मन फिराए और अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये उसके पुत्र की आज्ञानुसार बपतिस्मा ले। (लूका १३ : ३; मरकुस १६ : १६)।

यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप और अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, तो हमें सूचित करें।

प्रभु आप को आशीष दे।

राज्य का सुसमाचार

मित्रो :

सत्य सुसमाचार के इस कार्यक्रम में आप परमेश्वर के उस सुसमाचार को सुन रहे हैं जिसे मनुष्य को देने के लिये परमेश्वर स्वयं स्वर्ग पर से पृथ्वी पर उतर आया। यीशु मसीह, जिसका जन्म आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व पलस्तीन देश में यहूदा के बैतलहम में हुआ था, परमेश्वर का सामर्थी वचन देहधारी था। वह जगत में इसलिये आया ताकि जगत के लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये अपने आप को बलिदान करके, उन्हें यह सुसमाचार दे कि वे उसकी मृत्यु के कारण अपने पापों से छूटकर अनन्त जीवन पा सकते हैं। यूं तो यीशु ने अन्य बहुत से काम किए, जैसे कि बाइबल बताती है, कि उसने शिक्षा तथा उपदेश दिए, अनेकों आश्चर्यजनक काम किए, और लोगों को हर तरह की बीमारियों से चंगा किया। परन्तु सबसे पहिला काम जो यीशु ने किया उसके विषय में बाइबल हमें यूँ बताती है, कि उस ने यह प्रचार करना आरम्भ किया "कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।" (मत्ती ४ :१७)। और फिर लिखा है, कि वह सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। (मत्ती ४ : २३; ९ : ३५)।

न केवल परमेश्वर के राज्य के सम्बन्ध में यीशु ने यही सिखाया कि वह निकट आ गया है, अर्थात् बहुत ही जल्दी उसकी स्थापना होने जा रही है, परन्तु यीशु ने यह भी सिखाया कि किस प्रकार के लोग परमेश्वर के राज्य् के भीतर प्रवेश करेंगे। उसने कहा, "धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।" (मत्ती ५ : ३)। अर्थात्, जो लोग परमेश्वर के सम्मुख अपने आप को दीन करते हैं और उसकी बातों को अपने मन में दीनता के साथ स्वीकार करते हैं, वे ही उसके राज्य में प्रवेश करेंगे। एक अन्य स्थान पर यीशु ने इस प्रकार कहा, कि, "यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।" (मत्ती १८ : ३)। क्योंकि, "जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे, वह उसमें कभी प्रवेश करने न पाएगा।" (मरकुस १० : १५)। यानि स्वर्ग के राज्य के भीतर प्रवेश पाने के लिये मनुष्य को अपने आप को एक छोटे बालक की नाईं निर्मल, निष्कपट और आज्ञाकारी बनाना है। और फिर एक और जगह यीशु ने यूं कहा, "जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती ७ : २१)। अर्थात्, हम परमेश्वर की आज्ञाओं से आनाकानी करके उसके राज्य में दाखिल नहीं हो सकते। वास्तव में, पृथ्वी पर भी यदि हम किसी नए राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं तो हमें उस राज्य की आज्ञाएं माननी पड़ती हैं, और ठीक यही बात प्रभु यीशु ने स्वर्ग के राज्य के सम्बन्ध में भी कही। उसने इस बारे में एक दृष्टान्त भी देकर यूं कहा, कि जो कोई मेरी बातों को सुनकर उन्हें मानता है वह उस मनुष्य के समान है जो अपना घर चट्टान पर बनाता है। परन्तु जो मेरी बातों को सुनकर उन्हें नहीं मानता, वह एक ऐसे मनुष्य के समान है जो

अपना घर बालू रेत पर बनाता है। (मत्ती ७ : २४-२७)। एक बार जब नीकुदेमुस नाम का एक मनुष्य यीशु के साथ बातें कर रहा था, तो यीशु ने उस से कहा, कि, "यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" और जब नीकुदेमुस ने यीशु की बात सुनकर, हैरान होकर, उस से पूछा कि एक इन्सान दोबारा जन्म कैसे ले सकता है ? तो यीशु ने कहा, "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता" (यूहन्ना ३ : ३, ५)। जल और आत्मा से जन्म लेने का अर्थ बाइबल में हमें इस प्रकार मिलता है, कि जब मनुष्य जल के भीतर बपतिस्मा लेता है, अर्थात् वह जल के भीतर अपने पापों की क्षमा के लिये गाड़ा जाता है और उसमें से बाहर आता है, तो उसे परमेश्वर की ओर से पवित्रात्मा का दान मिलता है। (प्रेरितों २ : ३८; रोमियों ६ : ३, ४)। बपतिस्मा लेने के बाद वह मनुष्य अपने शरीर की इच्छानुसार नहीं परन्तु परमेश्वर के वचन के द्वारा उसकी आत्मा की अगुवाई में चलता है। (गलतियों ३ : २७; रोमियों ८ : १; यूहन्ना ६ : ६३)। किन्तु, याद रखें, कि यीशु ने कहा, कि यदि कोई मनुष्य नए सिरे से, अर्थात् जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। इसका अर्थ यह है, कि प्रत्येक मनुष्य जो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना चाहेगा उसे फिर से जन्म लेना होगा।

सो हमने देखा, कि यीशु ने आरम्भ में परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया। उसने कहा, कि वह निकट आ गया है, और उसने सिखाया कि लोग किस तरह से उसमें प्रवेश पाएंगे। परन्तु मरकुस ९ : १ में यीशु ने इस सम्बन्ध में एक और बात कही, अर्थात् उसने कहा, कि परमेश्वर के राज्य की स्थापना उसके उन

चेलों के जीवनकाल में ही हो जाएगी जो उस समय उसकी बातें सुन रहे थे। उसने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कोई-कोई ऐसे हैं, कि जब तक परमेश्वर के राज्य को सामर्थ सहित आया हुआ न देख लें, तब तक मृत्यु का स्वाद कदापि न चखेंगे।"

सो प्रत्यक्ष ही है, कि स्वर्ग या परमेश्वर के जिस राज्य का प्रचार यीशु ने आरम्भ में किया उसकी स्थापना उसके उन चेलों के जीवन काल में ही होनेवाली थी जो उस समय उसके साथ थे। परन्तु आज कितने ही लोग पृथ्वी पर यह प्रचार करते फिर रहे हैं कि परमेश्वर का राज्य भविष्य में आनेवाला है। वे सोचते हैं कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर अन्य राज्यों के समान होगा। जबकि प्रभु ने कहा, कि, मेरा राज्य इस जगत का नहीं" (यूहन्ना १८ : ३६), अर्थात् परमेश्वर का राज्य आत्मिक है। और फिर अपनी मृत्यु से पूर्व यीशु ने पतरस नाम के अपने एक चेले से कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा। अर्थात् पतरस को प्रभु ने यह अधिकार दिया कि वही सबसे पहिले लोगों को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के नियम बताएगा।

इन सब बातों के बाद, बाइबल हमें बताती है, कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, अर्थात् परमेश्वर की इच्छा से वह हम सबके पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर लटकाया गया। फिर जब वह मर गया तो कुछ लोगों ने उसकी लोथ को लेकर एक कब्र के भीतर गाड़ दिया। परन्तु इस घटना के बाद तीसरे दिन पृथ्वी पर एक बहुत बड़ा आश्चर्यक्रम हुआ, अर्थात यीशु की लोथ उस कब्र में नहीं थी ! प्रत्यक्ष ही है, कि जिस प्रकार यीशु ने कहा था, वह फिर से जीवित हो गया था। परन्तु याद रखें, उस राज्य की स्थापना अभी तक भी नहीं हुई

थी जिसके विषय में यीशु ने लोगों से कहा था कि वह निकट आ गया है, और अपने चेलों से कहा था कि वह उन्हीं के जीवनकाल में सामर्थ के साथ आएगा। किन्तु स्वर्ग में उठा लिए जाने से पहिले यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा देकर कहा, कि तुम यरुशलेम नगर में जाकर मेरी प्रतिज्ञा के पूरा होने की इन्तिज़ार करो। (लूका २४ : ४६-४९; प्रेरितों १:१-११)। सो बाइबल हमें आगे बताती है, कि जब वे चेले यरुशलेम में थे, और प्रभु की प्रतिज्ञा की बाट जोह रहे थे, तो यीशु के स्वर्गारोहण के दस दिन के बाद, वे एकाएक सामर्थ से भर गए, और पवित्रात्मा की सामर्थ से भरपूर होकर वे प्रभु यीशु के सुसमाचार का प्रचार करने लगे। उस दिन उन्होंने हज़ारों लोगों के सामने परमेश्वर के अद्भुत सुसमाचार का प्रचार किया, और पवित्रात्मा ने उनके प्रचार को इतना अधिक प्रभावकारी बना दिया, कि लिखा है, कि, "तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम क्या करें ?" और फिर लिखा है, कि तब "पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों २:३७, ३८)। उस दिन उनमें से तीन हज़ार लोगों ने प्रभु का वचन मानकर बपतिस्मा लिया, और जिन्होंने बपतिस्मा लिया लिखा है, उन्हें प्रभु ने अपने राज्य में मिला लिया जो कि वास्तव में उसकी कलीसिया अर्थात् उसके लोगों की मन्डली है। (प्रेरितों २:४१, ४७)।

मित्रो, प्रभु का राज्य उसकी कलीसिया है। पवित्र बाइबल कहती है, कि जिन लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा को माना है उन्हें उसने "अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया" है। (कुलुस्सियों १:१३)। मित्रो, आप भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकते हैं। बाइबल कहती है, कि उसमें "हमें छुटकारा

अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" (कुलुस्सियों १:१४)। जगत में केवल दो ही आत्मिक राज्य हैं, अर्थात् शैतान का राज्य तथा परमेश्वर का राज्य। यदि हम एक में नहीं हैं, तो हम दूसरे में हैं। परन्तु परमेश्वर की इच्छा है कि आप उसके राज्य में हों। वह आपको शैतान के राज्य में से निकालकर और उसके अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने उस ज्योति के राज्य में प्रवेश दिलाना चाहता है जिसमें शैतान के दासत्व से छुटकारा तथा पापों की क्षमा मिलती है।

मसीह कलीसिया का सिर है (कुलुस्सियों १ : १८), अर्थात् वह परमेश्वर के आत्मिक राज्य का राजा है। संसार में जितने भी लोग उसकी कलीसिया में हैं वे उसके राज्य की प्रजा है; वह उनके मनों पर राज्य करता है। (लूका ८ : ९-१५)। और उसका नया नियम उसके राज्य की व्यवस्था है। (२ यूहन्ना ९)।

परमेश्वर आप सबको अपने वचन की बातों को समझने तथा उन पर चलने के लिए शक्ति दे।

१०

उद्धार का सुसमाचार

सत्य सुसमाचार को सुननेवाले अपने सभी श्रोताओं का हम स्वागत करते हैं। प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का यह कार्यक्रम मसीह की कलीसिया के द्वारा आपके लिये तैयार किया गया है। यीशु मसीह का जन्म आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व यहूदा के बैतलहम नामक स्थान पर हुआ था। पवित्र बाइबल हमें बताती है, कि उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व परमेश्वर ने अपने भक्तों के द्वारा मसीह के जन्म तथा जीवन और उसकी मृत्यु के सम्बन्ध में अनेक बातों को लोगों पर प्रगट किया था। पहिले से की गई उन्हीं भविष्यद्वाणियों के अनुसार जब यीशु का जन्म हुआ, तो प्रत्येक बात जो परमेश्वर ने उसके बारे में पूर्व घोषित की थी वैसे ही पूरी हुई। यीशु कोई साधारण मनुष्य नहीं था। परन्तु वह वास्तव में परमेश्वर-मनुष्य या मनुष्य-परमेश्वर था, अर्थात् वह मनुष्य भी था और परमेश्वर भी था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। वह परमेश्वर का वचन था। परन्तु परमेश्वर ने उसे पृथ्वी पर मनुष्य बनाकर एक विशेष उद्देश्य के लिये भेजा था। उस उद्देश्य का वर्णन स्वयं यीशु ने ही एक जगह यों कहकर किया, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)। अर्थात्, उसे परमेश्वर ने जगत के सब लोगों के पापों के

प्रायश्चित के लिये दे दिया। सो वास्तव में यीशु जगत के लोगों के पापों का प्रायश्चित करने के लिये आया था। वह अपना बलिदान देने आया था। इसलिये जब वह लगभग ३३ वर्ष की आयु का हुआ तो वह परमेश्वर की मनसा से क्रूस पर चढ़ाया गया। परन्तु क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहिले यीशु ने पृथ्वी पर बड़ी-बड़ी महत्वपूर्ण शिक्षाएं दीं। जिनके द्वारा उसने लोगों को बताया कि वह पृथ्वी पर क्यों आया है, और किस प्रकार वह जगत के पापों का प्रायश्चित बनेगा, और मनुष्य पाप से छुटकारा पाकर किस प्रकार परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकता है। उसने लोगों को उनकी आत्मा के महत्व का ज्ञान दिया। उसने उन्हें उपदेश दिए। उसने बड़े-बड़े आश्चर्यजनक काम किए, और हर प्रकार के बीमारों को अपने स्पर्श से चंगा किया। उसने लोगों के सामने ऊंचे आदर्श रखे। फिर उसने कुछ महत्वपूर्ण दावे भी किए, और कुछ प्रतिज्ञाएं भी कीं। एक जगह, अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहिले, उसने अपने चेलों से यह प्रतिज्ञा की कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। कलीसिया का अर्थ है एक मन्डली। अर्थात्, यीशु ने लोगों की एक मन्डली बनाने की प्रतिज्ञा की। परन्तु उसने कहा, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। किन्तु, फिर वह क्रूस पर चढ़ाया गया, और उसकी लोथ को एक कब्र में रखा गया। लेकिन जैसे कि उसने अपनी मौत के पहिले दावा किया था, वह तीसरे दिन फिर जी उठा। उसके पुनरुत्थान के दस दिन के बाद यरुशलेम नगर में उसकी उस कलीसिया का आरम्भ हुआ जिसे बनाने की प्रतिज्ञा उसने अपनी मृत्यु से पहिले की थी। आज सुसमाचार का यह कार्यक्रम जो आप सुन रहे हैं यह उसी मसीह की कलीसिया के द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है जिसकी स्थापना स्वयं मसीह ने की थी।

हम आप को बताना चाहते हैं, कि हम सब का एक ही परमेश्वर

है, और वह परमेश्वर हम सबसे बहुत प्रेम करता है। परन्तु परमेश्वर पवित्र है, वह पाप से घृणा करता है। और क्योंकि हर एक मनुष्य पापी है, अर्थात वह परमेश्वर की समानता के स्तर से बहुत नीचे है। इस कारण पवित्र परमेश्वर पापी मनुष्य के साथ संगति नहीं कर सकता। अपने पाप तथा अधर्म के कारण प्रत्येक मनुष्य परमेश्वर की महिमा से रहित है, और उस से बहुत दूर और अलग है। परमेश्वर से अलग होने का अर्थ है अनन्त मृत्यु, अर्थात् आत्मिक मृत्यु। जिस प्रकार से कि आरम्भ में आदम और हव्वा अपने पाप के कारण परमेश्वर से अलग हो गए थे, और यद्यपि कि वे शारीरिक रूप से जीवित थे, परन्तु बाइबल कहती है कि वे आत्मिक रूप से मर गए थे (उत्पत्ति ३)। उसी तरह से आज प्रत्येक मनुष्य अपने ही पाप तथा अधर्म के कारण परमेश्वर से अलग है और आत्मिक दृष्टिकोण से मरा हुआ है। परमेश्वर जीवन का स्त्रोत है। वह आत्मा है, उसके भीतर आत्मिक जीवन है, और यदि मनुष्य आत्मिक जीवन प्राप्त करना चाहता है तो अवश्य है कि वह उसके पास वापस आए। अवश्य है कि मनुष्य उसके साथ अपना मेल कर ले। क्योंकि यदि इस जीवन में मनुष्य परमेश्वर के साथ अपना मेल नहीं कर लेता तो वह हमेशा के लिये उससे अलग और दूर हो जाएगा। अर्थात् वह उस आत्मिक जीवन को, जिसे उसने पाप के कारण खो दिया है, फिर कभी प्राप्त न कर सकेगा। और प्रभु यीशु ने कहा, कि यदि मनुष्य जगत की सारी वस्तुओं को भी प्राप्त कर ले, परन्तु फिर अपनी आत्मा की हानि उठाए तो उसे क्या लाभ होगा ?

मित्रो, हम आपको आपकी आत्मा के महत्त्व, उसकी स्थिति तथा उसकी आवश्यकता से परिचित कराना चाहते हैं। हम आपको बताना चाहते हैं, कि आपकी आत्मा जगत में सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु है। क्योंकि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य की देह को मिट्टी से बनाने

के बाद उसके भीतर अपना आत्मिक जीवन डाला था, अर्थात् उस ने मनुष्य को अपनी आत्मिक समानता पर बनाया है। शरीर भौतिक और नाशमान् है। वह जगत की अन्य वस्तुओं की नाईं नाश हो जाएगा—मिट्टी में मिल जाएगा। परन्तु आत्मा का अस्तित्व कभी न मिटेगा, अर्थात् आप एक आत्मिक प्राणी हैं और आत्मिक दृष्टिकोण से आप सदा विद्यमान् रहेंगे। परन्तु पाप के कारण आपकी आत्मा का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ नहीं है, और यदि उस टूटे हुए संबन्ध को आप अपने इस जीवन के रहते परमेश्वर के साथ नहीं जोड़ लेते, तो आप हमेशा के लिए उससे अलग और दूर हो जाएंगे। सो इस तेज़ी के साथ गुज़रते हुए वक्त में आपकी सबसे बड़ी आवश्यकता न तो रोटी है और न कपड़ा है और न मकान है, परन्तु आपकी विशाल आवश्यकता यह है कि आप अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल कर लें। आपको आत्मा की उस रोटी की आवश्यकता है, जिसको खा कर आपकी आत्मा तन्दरुस्त हो जाए। आपको उद्धार के उन कपड़ों की आवश्यकता है, जिसे पहिन कर आपकी आत्मा का नंगापन ढक जाए। और आपको उस अनन्त निवास स्थान की आवश्यकता है, जिसके भीतर आप हमेशा के लिये सुरक्षित हो जाएं। और आपकी इस विशाल आवश्यकता को केवल एक ही वस्तु पूरा कर सकती है, अर्थात्, यीशु मसीह का सुसमाचार।

यीशु मसीह का सुसमाचार उद्धार का सुसमाचार है। उसका सुसमाचार रिहाई और छुटकारे का सुसमाचार है। वह मनुष्य की आत्मा की मुक्ति का सुसमाचार है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रगट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं, कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हम से प्रेम किया; और हमारे पापों

के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (१ यूहन्ना ४ : ९, १०)। इसलिये, मित्रो, जब परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह क्रूस के ऊपर लटकाया गया था, तो वह परमेश्वर की दृष्टि में हम सब के और जगत के पापों का प्रायश्चित बना। पाप के कारण मनुष्य का जो आत्मिक सम्बन्ध परमेश्वर से टूट गया था, यीशु के बलिदान के कारण वह फिर से जुड़ गया है। उसने हमारे कारण अपने प्राणों को खो दिया ताकि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। वह हमारे कारण पापी बन गया, क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि जब वह क्रूस पर लटका था तो परमेश्वर ने जगत के पापों को लेकर उसके ऊपर रख दिया (यशायाह ५३ : ६), ताकि हम उसके कारण पवित्र बन जाएं। बाइबल कहती है, कि, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।" (२ कुरिन्थियों ५ : २१)। यीशु पाप रहित था। उसमें कोई पाप नहीं था। वह एक सिद्ध मनुष्य था। वह परमेश्वर का देहधारी पवित्र वचन था। परन्तु उसी को परमेश्वर ने जगत के लिये पाप ठहराया। उसने जगत के सारे पापों को लेकर उसके ऊपर रख दिया और उसे क्रूस की मृत्यु के हवाले कर दिया। वहां उसने, बाइबल बताती है, परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखा। इसलिये, जब वह अपनी मृत्यु के बाद फिर से जी उठा, तो उसने अपने चेलों को यह आज्ञा देकर जगत में भेजा, कि तुम जाकर सृष्टि के सारे लोगों को यह सुसमाचार दो कि तुम्हारा कर्ज़ा भरा जा चुका है; तुम्हारे पापों का प्रायश्चित किया जा चुका है। और उसने कहा, जो लोग इस सुसमाचार को सुनकर विश्वास लाएं उन्हें तुम बपतिस्मा दो, क्योंकि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। (मत्ती २८ : १९; मरकुस १६ : १५, १६)।

क्या आप अपने टूटे सम्बन्ध को परमेश्वर के साथ जोड़ना चाहते हैं ? क्या आप मौत से छूटकर जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं ? क्या आप अनन्त जीवन की आशा को प्राप्त करना चाहते हैं ? विश्वास कीजिए कि परमेश्वर का पुत्र यीशु आप के पापों का प्रायश्चित करने के लिये क्रूस के ऊपर मारा गया, प्रत्येक पाप से अपना मन फिराईए, और बपतिस्मा लेकर जल की कब्र के भीतर अपने वर्तमान मनुष्य को हमेशा के लिये दफ़ना दीजिए। प्रभु कहता है, कि यदि आप ऐसा करेंगे तो वह आपका उद्धार करेगा।

मित्रो, मेरी आशा है, कि आप इन बातों के ऊपर सारी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे, और यदि इन बातों के सम्बन्ध में आप और अधिक जानना चाहते हैं तो हमें लिखकर सूचित करेंगे।

परमेश्वर आपको अपने पास आने की समझ दे।

११

आज्ञापालन का सुसमाचार

मित्रो :

यूं तो इस समय बाइबल से सम्बन्धित बहुत सी बातों के बारे में हम विचार कर सकते हैं। किन्तु बाइबल का कोई भी विषय प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु के बिना अधूरा है। हम बाइबल के परमेश्वर के बारे में विचार कर सकते हैं। परन्तु यदि वह क्रूस के ऊपर मसीह की मृत्यु के द्वारा जगत पर अपने प्रेम को प्रगट नहीं करता तो आज उसके बारे में प्रचार करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। हम मसीह के बारे में विचार कर सकते हैं। परन्तु यदि वह क्रूस के ऊपर चढ़कर अपने आपको मानवता के लिये बलिदान नहीं करता, तो वह संसार में किसी भी अन्य अच्छे मनुष्य से बढ़कर और कुछ नहीं ठहरता। सम्पूर्ण बाइबल का विषय मसीह यीशु की मृत्यु पर ही आधारित है। यदि क्रूस पर यीशु न मरता तो आज इस कार्यक्रम की कोई आवश्यकता न होती। सो मसीह की मृत्यु का विषय बड़ा ही महत्वपूर्ण है। क्योंकि मसीह की मृत्यु एक सुसमाचार है। क्रूस पर मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर हमें बताना चाहता है कि वह हम से वास्तव में कितना अधिक प्रेम रखता है। मसीह, जो आज से लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व यरुशलेम में क्रूस पर चढ़ाया गया था परमेश्वर का पुत्र था। वह आदि में वचन था और परमेश्वर के साथ था। परन्तु

परमेश्वर ने उसे मनुष्य बनाकर जगत में भेज दिया और अपने होनहार के ज्ञान से उसे मनुष्यों के हाथों क्रूस पर चढ़वाकर जगत के सब लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये बलिदान कर दिया। पवित्र बाइबल का लेखक एक जगह कहता है, कि इस प्रकार परमेश्वर ने जगत पर अपने प्रेम की भलाई को प्रगट किया क्योंकि जब हम सब पापी ही थे परमेश्वर ने मसीह को हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये दे दिया । (रोमियों ५:८)।

मृत्यु वास्तव में एक बड़ा ही गम्भीर विषय है । हम इस विषय पर अकसर कोई बात करना नहीं चाहते। हम मृत्यु से डरते हैं और उसका नाम लेने से घबराते हैं । परन्तु मृत्यु आवश्यक है। हमें जीवन देने के लिये अनेक वस्तुओं को प्रतिदिन मरना पड़ता हैं। पेड़ काटे जाते हैं, पक्षी और पशु मारे जाते हैं। और जब तक हम मर नहीं जाते हम उस जीवन में प्रवेश नहीं कर सकते जिसका आरम्भ देह के इस भौतिक जीवन के बाद होता है। प्रत्येक मनुष्य को मरना है। क्योंकि मनुष्य का जन्म ही मरने के लिये हुआ है। परन्तु परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी मृत्यु से पहिले उसके साथ अपने उस टूटे हुए सम्बन्ध को जोड़ लें जिसके कारण हम उस से दूर और अलग हैं। वह चाहता है कि हम अपनी मृत्यु से पहिले उसके साथ अपना मेल कर लें। ताकि शरीर की इस मृत्यु के बाद हम उस से हमेशा के लिये अलग न हो जाएं परन्तु उसके पास पहुंचें और हमेशा उसके साथ रहें। इसलिये मसीह की मृत्यु आवश्यक थी। क्योंकि अपने पुत्र मसीह को बलिदान करके परमेंश्वर ने हमारे उन पापों का प्रायश्चित चुका दिया जिनके कारण हम उस से दूर और अलग थे। इसी कारण एक जगह बाइबल में हम यों पढ़ते हैं, कि, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त

जीवन पाए।" (यूहन्ना ३:१६)। अर्थात् परमेश्वर आप से प्रेम करता है! वह आपको मृत्यु के बाद नाश होने से बचाना चाहता है! इसलिये उसने हम सब के पापों का प्रयश्चित करने के लिये अपने एकलौते पुत्र को बलिदान कर दिया, ताकि हम सब उस में विश्वास लाकर उसके द्वारा अनन्त जीवन पाएं।

विश्वास सुनने से आता है। (रोमियों १०:१७)। विश्वास यदि परमेश्वर की इच्छा पर नहीं चलता तो वह व्यर्थ है। पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" (याकूब २:२६)। सो जो विश्वास मनुष्य को अनन्त जीवन दिला सकता है वह विश्वास एक ऐसा विश्वास है जो परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को मानता है। यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित है। उसके द्वारा हमारा उद्धार होता है। परन्तु कैसे? विश्वास के द्वारा। किन्तु जिस विश्वास की आज्ञा बाइबल देती है, वह एक ऐसा विश्वास है जो उसकी हर एक आज्ञा को मानता है। न केवल बाइबल में हम यही पढ़ते हैं कि मसीह हम सब के पापों के बदले में मरा, और जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए। किन्तु थोड़ा और आगे चलकर हम यह भी पढ़ते हैं, कि, "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है: परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" (यूहन्ना ३: ३६)। सो यदि आप मसीह में विश्वास करते हैं तो आप अच्छा करते हैं। परन्तु यदि आप उसकी किसी भी आज्ञा को नहीं मानते तो आप उस अनन्त जीवन को देख तक भी नहीं सकते जो विश्वास के द्वारा मिलता है। एक जगह स्वयं यीशु ने कहा था, कि, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो? जो कोई मेरे पास आता है, और मेरी बातें सुनकर उन्हें मानता

है," यीशु ने कहा, "मैं तुम्हें बताता हूं कि वह किस के समान है। वह उस मनुष्य के समान है, जिसने घर बनाते समय भूमि गहरी खोदकर चट्टान पर नेव डाली, और जब बाढ़ आई तो धारा उस पर लगी, परन्तु उसको हिला न सकी; क्योंकि वह पक्का बना था। परन्तु जो सुनकर नहीं मानता, वह उस मनुष्य के समान है, जिस ने मिट्टी पर बिना नेव का घर बनाया। जब उस घर पर धारा लगी, तो वह तुरन्त गिर पड़ा, और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (लूका ६ : ४६-४९)।

वास्तव में, सम्पूर्ण बाइबल में आज्ञापालन के विषय पर सबसे अधिक बल दिया गया है। आदम और हव्वा आरम्भ में अदन की बाटिका में से क्यों निकाले गए ? क्या इसलिए नहीं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था ? मूसा प्रतिज्ञा किये देश में प्रवेश क्यों नहीं कर पाया ? क्या इसलिए नहीं, क्योंकि उसने परमेश्वर की आज्ञा को तुच्छ जाना था ? नादाब और अबीहू दोनों, लोगों के देखते-देखते, आग में जलकर भस्म क्यों हो गए ? क्या इसलिए नहीं, क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को नहीं माना था ? परन्तु नामान यरदन के पानी में डुबकी लगाकर अपने कोढ़ से क्योंकर शुद्ध हो गया, और यहाँ तक, कि बाइबल कहती है कि उसका शरीर छोटे बालक का सा हो गया ? इसलिये, क्योंकि नामान ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था। एक दिन प्रभु यीशु ने मार्ग में जाते हुए एक अंधे को बैठे देखा, वह मनुष्य जन्म से अंधा था। यीशु ने भूमि पर थूककर मिट्टी सानी और अंधे की आँखों पर लगाकर उसे आज्ञा देकर कहा कि पास में बने कुंड के पानी में अपनी आँखों को धो ले। वह अंधा तत्काल उठकर उस पानी के स्थान पर गया और जैसे ही उस ने अपनी आंखें धोईं वह देखने लगा !

यहाँ मैं आपका ध्यान विशेषकर तीन बातों के ऊपर दिलाना चाहता हूं। अर्थात्, पहिले तो यह, कि परमेश्वर उन लोगों को योंही चंगा कर सकता था, बिना कोई आज्ञा दिए। और दूसरी यह, कि न तो पानी में और न उस मिट्टी में कोई ताकत थी। परन्तु वे केवल परमेश्वर की आज्ञाएं थीं। और तीसरी बात यह है, कि उन्हें अपने रोग से केवल तभी छुटकारा मिला जब उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को माना। अर्थात्, उन्हें चंगाई देने की ताकत परमेश्वर के पास थी, पर उस ताकत का काम उनके ऊपर तब तक न हुआ जब तक कि उन्होंने परमेश्वर की साधारण आज्ञाओं का पालन न किया। और ठीक यही बात बाइबल हमें हमारे उद्धार के सम्बन्ध में भी बताती है। अर्थात्, परमेश्वर ने हमारे उद्धार के लिये अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, और मसीह ने हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने आपको क्रूस पर बलिदान कर दिया। परन्तु जब तक हम उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते हम उस उद्धार को प्राप्त नहीं कर सकते जो वह हमें देना चाहता है। प्रभु यीशु ने अपने चेलों को जब यह आज्ञा देकर भेजा, कि तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को मेरे बलिदान का सुसमाचार दो, तो उसने उनसे कहा कि जो सुनकर विश्वास लाएं उन्हें तुम पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा देना। और जो मनुष्य विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मत्ती २८:१९; मरकुस १६:१५, १६)।

बपतिस्मा उद्धार पाने के लिए उसी प्रकार प्रभु की एक आज्ञा है जिस तरह नामान को यरदन में डुबकी लगाने को और उस अंधे को शिलोह के कुंड में आंखें धोने को प्रभु ने आज्ञा दी थी। और जिस प्रकार नामान और वह अंधा मनुष्य केवल तभी चगे हुए जब उन्होंने प्रभु की आज्ञा का पालन किया। उसी प्रकार हम भी आज प्रभु यीशु

मसीह के सुसमाचार के द्वारा केवल तभी मुक्ति पाते हैं जब हम उसकी आज्ञा को मानकर बपतिस्मा लेते हैं। बपतिस्मा लेने का अर्थ है जल के भीतर गाड़े जाकर उस में से बाहर आना। (रोमियों ६:३, ४; प्रेरितों ८:३६)। बाइबल कहती है, कि बपतिस्मा मनुष्य को अपने पापों की क्षमा के लिये लेना चाहिए।

मित्रो, प्रभु यीशु का सुसमाचार सारे जगत के लिये है। संसार में कोई भी मनुष्य उसकी आज्ञा का पालन करके अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। यदि आप इन बातों के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं, या प्रभु की आज्ञा का पालन करने में हमारी सहायता लेना चाहते हैं, तो हमें सूचित करें।

प्रभु आप सब के मनों की अगुवाई करे।

१२

सुसमाचार सबके लिए है

मित्रो !

इस कार्यक्रम में आप प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को सुनते हैं। प्रभु यीशु का जन्म आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व एक छोटे से स्थान पर हुआ था। यीशु के बारे में हम संसार की सबसे महान् पुस्तक, अर्थात् बाइबल में पढ़ते हैं। यीशु एक मनुष्य था। परन्तु वह कोई साधारण मनुष्य नहीं था। यीशु एक शिक्षक था। परन्तु वह कोई साधारण शिक्षक नहीं था। उसने पृथ्वी पर अनेकों कार्य किए। परन्तु उसके काम आश्चर्यजनक थे और सामर्थ से परिपूर्ण थे। किन्तु वास्तव में वह पृथ्वी पर एक विशेष उद्देश्य के लिये आया था। वह पृथ्वी पर मरने के लिये आया था। और जब उसकी आयु कुल तेंतीस वर्ष की ही थी तो वह एक क्रूस के ऊपर चढ़ाया गया, जहां उसने अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये अपने आपको बलिदान कर दिया। परन्तु यहां उसकी कथा का अन्त नहीं हुआ, किन्तु वास्तव में यहां से, इसके बाद, उसके इस सामर्थपूर्ण सुसमाचार का आरम्भ हुआ, जिसका प्रचार सदियों से पृथ्वी पर किया जा रहा है, और जिसे सुनाने के लिये आज मैं फिर से आप की सेवा में उपस्थित हूं। क्योंकि यीशु केवल मरा ही नहीं परन्तु वह अपनी मौत के बाद तीसरे दिन फिर से जी उठा। जिन आँखों ने उसे क्रूस के ऊपर मरते हुए देखा था उन्हीं आँखों ने उसी यीशु को फिर जीवित देखा। उन्हों ने

किसी आत्मा को नहीं देखा; उन्होंने किसी भूत या प्रेत को नहीं देखा, परन्तु वास्तव में उसी मनुष्य यीशु को फिर से ज़िन्दा देखा जो उनकी आंखों के सामने क्रूस पर चढ़ाया गया था। जिसे उन्हों ने मरते देखा था, जिस की लोथ को उन्हों ने अपनी आँखों के सामने एक कब्र के भीतर गाड़े जाते देखा था, उसी यीशु को उन्होंने फिर से देह सहित जीवित देखा। वह उनके साथ जी उठने के बाद एक दिन या एक हफ्ते नहीं परन्तु चालीस दिन तक रहा, और उन्होंने उसके साथ बातें कीं। उसी यीशु ने उन लोगों को बतायां था कि वह पृथ्वी पर क्यों आया था, और वह वास्तव में कौन है। उसने कहा था, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" (यूहन्ना ३ : १६)।

सो जिस यीशु का सुसमाचार आप इस समय सुन रहे हैं, वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। बाइबल उसके विषय में हमें बताती है, कि वह आदि से परमेश्वर के साथ था, अर्थात् इस से भी पहिले कि सृष्टि की किसी भी वस्तु का जन्म होता, आकाश और पृथ्वी की रचना होती, वह परमेश्वर के साथ था। क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।" और वही "वचन देहधारी हुआ।" (यूहन्ना १ : १, १४)। परमेश्वर ने अपने पवित्र वचन को मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर पापियों के बीच भेज दिया, क्योंकि उस ने इन्सान से प्रेम रखा। बाइबल में लिखा है, कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को दे दिया। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को कुर्बान कर दिया, उसने उसका बलिदान दे दिया, क्योंकि उसने जगत से अद्भुत प्रेम रखा।

अकसर जब यीशु मसीह और उसके सुसमाचार का प्रचार किया

जाता है; या जब बाइबल के विषय पर कुछ बताया जाता है, तो बहुतेरे लोग कहते हैं, कि इसकी हमें कोई आवश्यकता नहीं, इससे हमारा कोई मतलब नहीं । क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह को और बाइबल को एक विदेशी प्रभु और एक विदेशी धर्म की पुस्तक समझते हैं। यीशु मसीह, बाइबल, और मसीही ये सब नाम उनके लिये विदेशी हैं। जैसे ही लोग इन में से किसी नाम को सुनते हैं तो तुरन्त उनके मन में यह बात आ जाती है, कि एक विदेशी धर्म का प्रचार किया जा रहा है। बहुतेरे लोग मुझसे कहते हैं कि मैं एक भारतीय होकर एक विदेशी धर्म का प्रचार क्यों कर रहा हूं। मित्रो, यह धारणा गलत है, यह विचार पूर्वद्वेष और नासमझी का प्रतीक है। क्या परमेश्वर विदेशी है ? यदि नहीं, तो फिर उसका वचन और उसकी पुस्तक और उसके मार्ग पर चलनेवाले लोग कैसे विदेशी हो सकते हैं ? परमेश्वर किसी एक देश या किसी एक जाति का परमेश्वर नहीं हैं। वह जगत का परमेश्वर हैं। उसने अपनी पुस्तक बाइबल को सारे जगत के लोगों के लिये दिया है। उसने ऐसा प्रेम सारे जगत के लोगों से रखा, कि अपने पवित्र वचन को उसने मनुष्य बनाकर पृथ्वी पर सब लोगों के लिये भेज दिया। उसने अपनी मनसा से अपने एकलौते पुत्र को सारे जगत के लिये क्रूस पर बलिदान कर दिया, ताकि उसके पवित्र बलिदान के फलस्वरूप सारे जगत के पापों का प्रायश्चित हो जाए।

यीशु मसीह के बलिदान का सुसमाचार सारे जगत के लोगों के लिये है। परमेश्वर के प्रेम का सुसमाचार सारे जगत के लोगों के लिये हैं। जब यीशु परमेश्वर की इच्छा से क्रूस के ऊपर मरा तो वह जगत के सारे लोगों के लिये मरा। उसने कहा था, "और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा।" (यूहन्ना १२ : ३२)। और जब वह मर गया और

परमेश्वर की सामर्थ से तीसरे दिन मुर्दों में से फिर जिलाया गया, तो उसने अपने चेलों को इस प्रकार आज्ञा देकर भेजा, कि, "तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, में जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती २८ : १९, २०)। "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस १६ : १५, १६)।

सो परमेश्वर ने अपने पुत्र को सारे जगत के लिये दे दिया। यीशु क्रूस के ऊपर सारे जगत के लोगों के पापों के प्रायश्चित के लिये लटकाया गया। वह सारे जगत का उद्धारकर्त्ता है। उसने इस सुसमाचार का प्रचार करने के लिये अपने चेलों को सारे जगत में, सृष्टि के सब लोगों में, और सारी जातियों में भेजा। और उसने कहा, कि इस सुसमाचार को सुनकर जगत में जो कोई भी मनुष्य विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसीं का उद्धार होगा। इसका अर्थ यह है, कि इस समय आप कोई भी क्यों न हों, आप किसी भी जाति के हों; धनी या निर्धन हों, पढ़े-लिखे या अनपढ़ हों; चाहे कुछ भी आपका रंग हो और कोई भी आपकी भाषा हो, यदि आप मसीह और उसके सुसमाचार में विश्वास लाएंगे और बपतिस्मा लेंगे तो उसके बलिदान के कारण आपका उद्धार होगा। उसके भीतर आप एक नए इन्सान और एक नई सृष्टि बन जाएंगे। (२ कुरिन्थियों ५:१७)। उसमें होकर, आप एक अधर्मी से धर्मी और एक पापी से पवित्र बन जाएंगे। (२ कुरिन्थियों ५:२१)। क्योंकि उसने सारे जगत के पापों को अपनी देह के ऊपर लेकर परमेश्वर के अनुग्रह से प्रत्येक मनुष्य के

लिये मृत्यु का स्वाद चखा। वह हमारे लिए पृथ्वी पर नीचे आ गया, ताकि हम उसके द्वारा स्वर्ग पर उठाए जाएं। वह हमारे लिए पापी बन गया ताकि हम उसमें होकर पवित्र बन जाएं। वह हमारे कारण अधर्मी बनाया गया, ताकि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं। क्या जगत में इससे बड़ा और कोई सुसमाचार सुनाया जा सकता है ? क्या जगत को इससे बड़े किसी और सुसमाचार की आवश्यकता है ? मित्रो, मैं आप से कह रहा हूं, इन बातों को सुनने के बाद आप क्या करने जा रहे हैं ? क्या आप अपने ध्यान को किन्हीं और बातों में लगाने जा रहे हैं ? या क्या आप प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार को मानकर अपनी आत्मा को बचाने की सोच रहे हैं ? प्रभु यीशु ने कहा है, कि, "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे; वह अपने आपे से इन्कार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा ? और मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा ? (मरकुस ८ : ३४-३७)।

मित्रो, मेरी आशा है, कि आप अपनी आत्मा के विशाल महत्व की ओर ध्यान देंगे, और परमेश्वर के प्रेम की कथा को और उसके पुत्र यीशु मसीह के सुसमाचार को मन की सीधाई तथा नम्रता के साथ स्वीकार करेंगे।

इन सब बातों को बड़े ही ध्यान से सुनने के लिये मैं आप सबका शुक्रगुज़ार हूं। वास्तव में, यदि यीशु मसीह हम सबके लिए क्रूस पर न मरता तो आप सबसे इस समय कदाचित् मेरा परिचय न हो पाता। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि यीशु का सुसमाचार न केवल हमारा आपस परिचय ही कराता है, परन्तु जब हम सब उसे मान

लेते हैं तो हम सब उसमें एक हो जाते हैं। जैसे कि बाइबल में लिखा है, कि, "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास, न स्वतंत्र; न कोई नर न नारी; क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।" (गलतियों ३ : २७, २८)।

अब यदि इन बातों के सम्बन्ध में आपको और अधिक जानकारी की आवश्यकता है, या मैं आपकी कोई सहायता कर सकता हूं, तो आप हमारे पते पर लिखकर हमें सूचित कर सकते हैं। प्रभु का अनुग्रह आप सब पर बना रहे।

रेडियो पर सुनिए !

सत्य सुसमाचार के साप्ताहिक कार्यक्रम सप्ताह में चार बार

प्रत्येक :

मंगलवार	— रात को	९ : ०० बजे
बृहस्पतिवार	— रात को	९ : ०० बजे
शुक्रवार	— रात को	९ : ०० बजे
रविवार	— दिन में	१ : ३० बजे

ये कार्यक्रम रेडियो श्री लंका (सिलोन) से १९, २५ तथा ४१ मीटर बैन्ड पर सुने जा सकते हैं।

वक्ता :

सनी डेविड

प्रस्तुतकर्त्ता :

मसीह की कलीसिया

नई दिल्ली।